प्रागन कृत भँवरगीत

प्रांगन कृत भँवरगीत

सम्पादक

हरिमोहन मालवीय

१८८६ शक

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

प्रकाशक
श्री गोपालचन्द्र सिंह
सचिव
प्रथम शासन निकाय
हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

प्रथम संस्करण . ११००
मूल्य : १. ५०
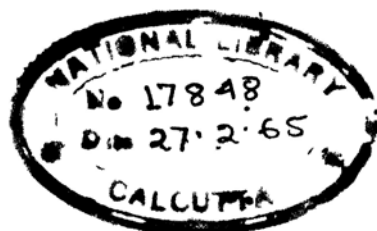
मुद्रक
श्री रामप्रताप त्रिपाठी
सम्मेलन मुद्रणालय, प्रयाग

विषयानुक्रम

१. हिन्दी के प्राचीन ग्रन्थों के प्रकाशन की योजना	७
२. दो शब्द	९
३. पदानुक्रम	११
४. प्रागन और उनका भँवरगीत	१
५. भँवरगीत की पाठ-समस्या	१०
६. पद	१९
७. सहायक पुस्तक सूची	८१
८. भ्रमरगीत सम्बन्धी साहित्य	८२

हिन्दी के प्राचीन ग्रंथों के प्रकाशन की योजना

राष्ट्रभाषा हिन्दी के अभ्युत्थान और हिन्दी साहित्य की श्री-वृद्धि के लिए पिछली एक दशाब्दि में शासन तथा शासनेतर संस्थाओं एवं व्यक्तियों द्वारा मौलिक तथा अनूदित रूप में ग्रंथ-निर्माण का जो कार्य हुआ है, निःसंदेह वह हिन्दी के उज्ज्वल भविष्य का द्योतक है। इस अवधि में हिन्दी साहित्य की विभिन्न विधाओं पर लिखे गये विज्ञान, प्रविधि, शोध और कोश विषयक ग्रंथों का विशेष महत्व है।

इसके साथ ही हिन्दी के सर्वांगीण विकास-विस्तार के लिए यह भी आवश्यक है कि उसकी प्राचीन निधि को प्रकाश में लाया जाय। देश के बहुसंख्यक ग्रंथागारों में हिन्दी की जो अप्रकाशित, अज्ञात और महत्वपूर्ण कृतियाँ हस्तलेखों के रूप में पड़ी हुई हैं और जिनके प्रकाश में आने से हिन्दी के वास्तविक गौरव का पता चल सकता है उनके उद्धार की ओर ध्यान देना भी आवश्यक है।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन विगत कई वर्षों से हस्तलिखित ग्रंथों के संग्रह और संरक्षण का कार्य करता आ रहा है। उसी का परिणाम है कि सम्मेलन संग्रहालय में अब तक लगभग साढ़े सात सहस्र ग्रंथों का संग्रह हो चुका है। इस वृहत्संग्रह में अनेक ग्रंथ ऐसे भी हैं, जिन्हें हिन्दी की मौलिक एवं स्थायी निधि कहा जा सकता है। सम्मेलन ने इस प्रकार के ग्रंथों के प्रकाशन की एक योजना बनायी है। प्रागन कवि का 'भँवरगीत' इस योजना का प्रथम ग्रंथ है, जिसे हिन्दी जगत् के समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमें प्रसन्नता हो रही है।

'भँवरगीत' का यह संस्करण पाँच हस्तलिखित प्रतियों की सहायता से सम्पादित किया गया है, जिनमें से चार प्रतियाँ तो सम्मेलन संग्रहालय में ही सुरक्षित हैं और एक प्रयाग संग्रहालय में विद्यमान हैं। इसी ग्रंथ की एक प्रति हमें अवधी साहित्य परिषद् (हिन्दी सभा), सीतापुर के मंत्री डा० नवलबिहारी मिश्र से भी प्राप्त हुई थी; किन्तु खेद है कि प्रस्तुत संस्करण के सम्पादन मे उसका उपयोग नही किया जा सका। इस सहयोग के लिए हम प्रयाग संग्रहालय के निदेशक डा० सतीशचन्द्र काला और अवधी साहित्य परिषद्, सीतापुर के मंत्री डा० नवलबिहारी मिश्र के अत्यन्त कृतज्ञ और आभारी है। प्रस्तुत पुस्तक के सम्पादक श्री हरिमोहन मालवीय भी हमारे धन्यवाद के पात्र हैं, जिन्होंने बड़ी लगन, निष्ठा और परिश्रम से इस कार्य को संपन्न किया।

गोपालचन्द्र सिंह
सचिव, प्रथम शासन निकाय,
हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

दो शब्द

प्राचीन पाण्डुलिपियों के सम्पादन की प्रेरणा मुझे गुरुवर डा० माता प्रसाद जी गुप्त से प्राप्त हुई और इसी कारण 'बिहारी-सतसई' की पाठ-समस्या पर मैंने १९५८ से शोध-कार्य भी प्रारम्भ किया था। मुझे हर्ष है कि हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग के प्रथम शासन निकाय के सचिव श्री गोपाल चन्द्र सिह जी ने कृपापूर्वक प्रागन कवि कृत 'भँवरगीत' के सम्पादन का कार्य देकर सम्मेलन की सेवा का अवसर प्रदान किया। मैं इस सम्पादन की पूर्णता का दावा नहीं कर सकता, किन्तु पाठ-निर्धारण के इस गुरुतर कार्य को मैंने पाण्डुलिपियों के साक्ष्य पर पूर्ण करने का यथासाध्य प्रयास किया है। इस कार्य में मुझे कुछ सहायता श्री जवाहरलाल चतुर्वेदी के निबंध के अतिरिक्त, श्री देवदत्त जी शास्त्री, श्री वाचस्पति गैरोला तथा श्रीमती हर्षवती मालवीय से भी मिली है। अतएव मैं इनके प्रति कृतज्ञ हूँ।

सम्मेलन के विशेष कार्याधिकारी श्री विद्याभास्कर जी तथा सहायक मंत्री श्री रामप्रताप जी त्रिपाठी के सौजन्य के प्रति मैं अपना आभार व्यक्त करता हूं, जिनकी शुभकामनाएँ मुझे सुलभ रही हैं। मैंने प्रयाग संग्रहालय की प्रति का भी उपयोग किया है। अतएव संग्रहालयाध्यक्ष डा० सतीशचन्द्र काला के प्रति भी मैं अपनी कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

--हरिमोहन मालवीय

पदानुक्रम

१.	अब मोहिं देहु आयसु	६८
२.	अस मैं मीत काको	८२
३.	आयसु दीन्हों सखा	१
४.	ऊधौ अनषन मरतु हैं	३७
५.	ऊधौ अंत न होहिं	६९
६.	ऊधौ कुसल छेम तें	७६
७.	ऊधौ तुम अधिकारी	१६
८.	उधौ, तो सों कहौं	८६
९.	ऊधौ बृज की गैल	१४
१०.	ऊधौ बृजवासी मोतें	८५
११.	ऊधौ मागन तें इत	७१
१२.	ऊधौ रहे कथा कहि	८३
१३.	कठिन परी ऊधौ को	१२
१४.	करि गुर गोपी ऊधौ	६५
१५.	कहत उपनिषद जानबी	४९
१६.	कहबी कछू न राषि	४१
१७.	कहिए कहा जो जोग	३०
१८.	कहो हमारो बस	३४
१९.	कहौ प्रभु हौ तुम	८४
२०.	कहौ हम कौन बड़ाई	७०
२१.	खायौ खेल्यौ एक सँग	३८
२२.	गई लै भीतर नंद की	४
२३.	गए छीर निधि कौन	५७

२४. गोपी पारथ कृष्ण ६१
२५. गोपी पूरन ब्रह्म तें ५२
२६. गोबरघन में अंस कै ५९
२७. चरन गहि ऊधौ ३
२८. चर्चाहि सिगरी रैन ७
२९. जहाँ निरन्तर नेह है ४७
३०. जिय जिय ऊधौ ६
३१. जिय मे कहत गोपिका ११
३२. तब लीन्हो चित ३३
३३. ताते कहत न संभवै ६४
३४. ताते विलग कहा हम १५
३५. तिहारी प्रीति जाइ नहि ६६
३६. तुम बिनु जानि सिरोमनि ७७
३७. तेहि छिन नंद खरक ५
३८. तैसी मधुकर यो भई ६०
३९. देखि दसा ब्रज तियन ४७
४०. पूरनता को गुन सुनो ५३
४१. प्रभु जी उपजै कौन कै ७९
४२. प्रभु जू कठिन बीती राति ७८
४३. प्रभु जू प्रेम निधि ब्रज ८१
४४. प्रीति निरंतर कहत है ५१
४५. बंसी की कुसल कहौ १०
४६. बादि बकत हौ बावरी ४४
४७. मधुकर आवत लाज २३
४८. मधुकर उतपति कहन कौं ६२
४९. मधुकर उनही लागि १९
५०. मधुकर कब अै हैं १८

५१. मधुकर कहाँ ग्यान उपदेसौ २८
५२. मधुकर तुम रस लंपट २५
५३. मधुकर नंदकुमार सों ३५
५४. मधुकर निगुन सकेलिए ३६
५५. मधुकर मन में सोंचि २१
५६. मधुकर मिटै सुभाउ २४
५७. मधुकर यह विपरीति २०
५८. मधुकर यह सुनि को २२
५९. मधुकर या अनुमान तें ५५
६०. मधुकर हमहिं बावरी २६
६१. मधुकर हम न समझि हैं १७
६२. मधुप खिझत खिसियाइ ४३
६३. मधुप जहाँ तुमसे चतुर ४६
६४. मधुप जू कहियो यतनी २७
६५. मधुप विहारी विरह पर ४०
६६. मधुप मनहिं अनखैं ४२
६७. मधुप सुनी तुम कहत हौ ५८
६८. मो कों निपट गँवार १३
६९. यकदासी अरु ३९
७०. रस के तुम रसिक २९
७१. रसिक रास सो रमि ४८
७२. राधानाथ देषी जाइ ८०
७३. लालची नैन हमारे ३२
७४. लोक चौदहो ५४
७५. सगुन निगुन जसुदा ५०
७६. सबै मिलि इहै आसिष ६७
७७. साजे रथ सुफलक सुत ७३

७८. सांझ समै पुर बैठे ७५
७९. सिख निजु गाढे कै २
८०. सिख सुनि सषा सिधाये ९
८१. सुनी अहै इतिहास ६३
८२ सोंच भगो ऊधो को ७२
८३. हमकौ सपनेहु मिलन ३१
८४. हरि जननी जिय-ही सों ८
८५. हाँको रथ कै प्रनाम ७४
८६. हौं कछु औरै कहत हौं ५६

प्रागन और उनका भँवरगीत

कवि-परिचय

खोज-विवरणों, प्राचीन-हस्तलेखों एवं समीक्षा-निबन्धों में भँवरगीत के कवि का नाम, 'प्रागन' एवं 'प्रागनि' दो प्रकार से मिलता है। कवि के जीवन-पक्ष को उद्घाटित करने वाले तथ्यो के अभाव मे कुछ निश्चित जानकारी दे पाना असम्भव है। जन्म एवं भँवरगीत के रचना-काल के अतिरिक्त प्रागन के समकाल के सम्बन्ध मे भी पर्याप्त भ्रम है। इस संबंध मे अभी तक प्रामाणिक एवं विश्वसनीय सूचनाओं का अभाव है। श्री भगीरथ प्रसाद दीक्षित ने लिखा है कि "खोज-रिपोर्ट में प्रागन कवि-कृत 'भ्रमरगीत' का उल्लेख है। व्यवस्थापक महोदय ने इसे सन् १८५० ई० (सं० १९०७ वि०) के पश्चात् का माना है, परन्तु इसकी संवत् १९०५ वि० की लिखी कापियाँ मिली है। अतः प्रागन की गणना प्राचीन कवियों में भी होनी चाहिये।"[१]

डा० स्नेहलता श्रीवास्तव ने अपने शोध-प्रबंध मे इस भंवरगीत को बीसवी शताब्दी की रचना माना है।[२] प्रागन के इतिवृत्त के सम्बन्ध में विचार-योग्य तथ्य प्रस्तुत करने का श्रेय व्रज-भाषा के विद्वान् लेखक श्री जवाहरलाल चतुर्वेदी को है, जिन्होंने "प्रागन कवि-एक परिचय" विषयक लघु निबंध में 'गोपी-प्रेम-पीयूष-प्रवाह' के रचयिता श्री नवनीत जी के कथन

---

१. प्रागनि कविकृत भ्रमरगीत : माधुरी, जुलाई—१९२५।

२. 'हिन्दी में भ्रमरगीत काक और उसकी परम्परा', पृष्ठ ४१२।

के आधार पर लिखा है कि "प्रागन कवि करौली (राजस्थान) के गौड़ ब्राह्मण राजाराम के पुत्र थे, जो किन्हीं कारणवश मथुरा आ बसे। तथा मथुरास्थ वल्लभ सम्प्रदाय के सुप्रसिद्ध आचार्य श्री कल्याणराय जी के शिष्य हो गये थे। श्री कल्याणराय जी का समकालीन मानकर प्रागन की उपस्थिति का संवत् चतुर्वेदी जी ने सं० १८०७ वि० माना है।

खोज-विवरण में भँवरगीत की प्राचीनतम प्रति संवत् १८३६ तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग के हिन्दी-संग्रहालय में संवत् १८४० वि० की प्रति विद्यमान है। इससे यह सिद्ध हो जाता है कि श्री भगीरथप्रसाद दीक्षित एवं डा० स्नेहलता श्रीवास्तव के अनुमान भ्रमपूर्ण हैं।

एक मत के अनुसार प्रागन अष्टछाप के कवि परमानन्ददास जी के वंशज और कन्नौज-निवासी थे। श्री भगीरथप्रसाद दीक्षित ने कवि की भाषा के आधार पर इटावा मैनपुरी आदि जिलो में से कहीं का निवासी अनुमानित किया है।

ऊपर वर्णित मौखिक एवं अनुमानित सूचनाएँ असंदिग्ध नही समझी जा सकतीं। प्रागन कवि के नाम से "भँवरगीत" के अतिरिक्त किसी रचना का भी खोज-विवरण तथा साहित्य के इतिहास में उल्लेख नहीं है। इसके अतिरिक्त सन्दर्भ-ग्रन्थों में भी कोई संकेत इस भक्त-कवि के सम्बन्ध में प्राप्त न होने के कारण जीवन-वृत्त पर कुछ प्रकाश डालना सम्भव नहीं है।

भ्रमरगीत-परम्परा

उद्धव-गोपी-संवाद एवं भ्रमरगीत का उत्स श्रीमद्‌भागवत के दशम स्कंध के ४६ एवं ४७ वें अध्यायों में है। हिन्दी में इन दोनों कथाओं का समावेश करके भ्रमरगीत की परम्परा आगे बढ़ी है। सूरसागर में भ्रमरगीत का प्रसंग तीन स्थलों में उपलब्ध है, जिसमें से दो स्थलों पर कथा का रूप

संक्षिप्त है। नंददास ने अपने भ्रमरगीत में तर्कमयी शैली अपना कर प्रेम-लक्षणा भक्ति का प्रतिपादन किया है। अष्टछाप के अन्य कवियों ने भी भ्रमरगीत की परम्परा का निर्वाह अपने काव्य-ग्रन्थों में किया है, जिसमें परमानंददास, एवं कृष्णदास प्रमुख हैं।

"भ्रमरगीत" अथवा "भँवरगीत" नाम से कालिदास (सं० १७५१) केशव ब्रह्मभट्ट, नंददास (सं० १६५०) वृन्दावनदास, कृष्णदास, प्रागन, रसनायक, वृन्दावनदास (सं० १८०३ वि०) वृन्दावनदास (अन्य), सेनकवि, तुलसीदास, तेजकवि, जनमुकुंद गणेशप्रसाद तथा रसिकराय की रचनाओं का उल्लेख प्राप्त है। पं० सत्यनारायण कविरत्नकृत "भ्रमरदूत" भी उपालम्भ काव्य परम्परा की उत्कृष्ट कृति है। यही प्रसंग मलूकदास कृत "उद्धवपचीसी", 'गौरीशंकर कृत 'उद्धवलीला,' नारायण ब्रह्मभट्ट-कृत 'उद्धव-ब्रजगमन-लीला', रूपगोस्वामी "कृत उद्धवलीला का अनुवाद, कृष्ण चैतन्य गोस्वामी 'निजकवि'-कृत उद्धवगोपी-संवाद', बाबू जगन्नाथदास 'रत्नाकर'-कृत "उद्धव-शतक", तथा कवि 'वचनेश'-कृत "उद्धव प्रति" की कृतियों में भी सरस कविताओं के माध्यम से समाहित हुआ है। इसके अतिरिक्त अक्षर अनन्य भूत 'प्रेमदीपिका', ग्वाल (सं० १८७९ वि०) कृत "गोपी-पच्चीसी", घनश्याम-कृत 'प्रेम-रस-सागर', नवनीत चतुर्वेदी (मथुरा सं० १९१५ वि०) कृत "गोपी-प्रेम-पीयूष-प्रवाह", मथुरानाथ (सं० १८३५) कृत "विरह-बत्तीसी"; हरिराय कृत "रसिक-पचीसी" तथा "स्नेह लीला"; रस रूप (सं० १८८९ वि०) कृत "वियोगवल्ली" अर्थात् "उपालंभ-सतक"; कवि लक्ष्मीनारायण रचित "प्रेम-तरंगिणी"; शिवराम (सं० १८४६ वि०) रचित "निरगुन-सगुन-निरूपन"; हंसराज बख्शी (सं० १७८९ वि०) रचित "स्नेह-सागर"; सदाशिवलाल (सं० १८८६ वि०) कृत "जुक्ति-समूह" तथा श्री अयोध्यासिंह उपाध्याय रचित "प्रियप्रवास" आदि कृतियों में भी इस कथा का विकास किया गया है। आनन्दघन, देव, बिहारी, भिखारीदास, पद्माकर, मतिराम, रहीम, ग्वाल कवि के पिता सेवादास, भारतेन्दु, श्री रमाशङ्कर शुक्ल 'रसाल', तथा श्री

श्यामसुन्दरलाल दीक्षित "श्याम" आदि कवियों की फुटकर रचनाओं में भ्रमरगीत-काव्य-परम्परा की उत्कृष्ट रचनाएँ प्राप्त हैं।[१]

ऊपर वर्णित भ्रमरगीत काव्यों के रचियताओं के दृष्टिकोण में पर्याप्त अन्तर है। भक्ति एवं रीति-प्रभाव-युक्त भ्रमरगीतों में भाव, भाषा, एवं छन्दों की दृष्टि से अन्तर है। इस काव्य की सर्वोत्कृष्ट रचनाएँ पद-साहित्य के रूप में हैं। प्रागन ने भी सूरदास द्वारा प्रवर्तित पद पद्धति का अनुगमन किया था।

प्रागन-कृत भँवरगीत की कथा—

श्री कृष्ण, नंद और यशोदा के प्रेम के प्रति कृतज्ञता एवं गोपियों के लिए योग, संयम और ध्यान का संदेश देकर उद्धव को ब्रज भेजते हैं। उद्धव वहाँ पहुँचकर यशोदा नंद और गोपियों को संदेश देते है, जो विरह-व्यथित, प्रेम-विह्वल एवं कृष्ण की मधुर-स्मृतियों के चिन्तन में निमग्न-प्रत्यागमन की अवधि-आस में जी रही है। गोपियाँ यह समझती हैं कि कृष्ण वंशी और कुब्जा के प्रेम के कारण ब्रज लौटने में विवश हैं। वार्ता में गोपियाँ अपने दुख-दैन्य और प्रेम—विवशता का निदर्शन करती हुई योग का निषेध भी करती हैं। प्रेमलक्षणा-भक्ति और उसकी वाहिका गोपियों से प्रभावित हो उद्धव मथुरा लौटकर कृष्ण को ब्रज की दशा का मार्मिक वर्णन सुनाते हैं। कृष्ण-व्रज-स्मृति के कारण भाव-विह्वल होकर अपनी प्रभुता एवं गोपियों का अपने प्रति अद्वैत भाव प्रकट करते हैं प्रागन के भ्रमरगीत में इसी कथा को कवि ने पद, दोहा, सोरठा छन्दों में प्रस्तुत किया है।

कथा का वैशिष्ट्य

भँवरगीत की मूल कथा का उत्स श्रीमद्भागवत में है, किन्तु दोनों की कथाओं में पर्याप्त अन्तर है। प्रागन का उद्धव कृष्ण का सन्देशवाहक

---

१. भ्रमरगीत परम्परा के कृतियों की अधिकांश रचनाओं की सूचनाएँ मुझे श्री जवाहरलाल चतुर्वेदी के लेख से मिली हैं।

मितभाषी है। कृष्ण के योग और ज्ञान के सन्देश की वह न व्याख्या करता है; और न उस पर उसकी स्वतः की दृढ़ आस्था है, वह अन्ततोगत्वा गोपियों की प्रेमलक्षणा भक्ति से प्रभावित हो जाता है। किन्तु भागवत का उद्धव गोपियों को अपने कथन से आश्वस्त करने की क्षमता रखता है, क्योंकि वह कृष्ण का प्रिय सखा साक्षात् बृहस्पति जी का शिष्य महामति—मान, वृष्णि वंशीय यादवों का माननीय मंत्री भी है।

वृष्णीनां प्रवरो मन्त्री कृष्णस्य दयितः सखा।
शिष्यो बृहस्पतेः साक्षादुद्धवो बुद्धि सत्तमः॥१०।६४।

इसी प्रकार सूर के उद्धव ज्ञान के अहंकार में आकठ डूबे एवं निर्गुन तत्वज्ञान के प्रबल प्रस्तोता है। नन्ददास के उद्धव की प्रज्ञा और भी प्रखर है, वे ब्रह्म के निराकार रूप का प्रतिपादन अपनी प्रगल्भ प्रतिभा के बल पर करते हैं।

भागवत मे उद्धव का प्रथम साक्षात्कार नंद से होता है किन्तु इस भँवरगीत में वे पहले यशोदा से मिलते हैं। भागवत में कुब्जा के प्रति कृष्ण के प्रेम का वर्णन नही है। सौत के रूप में वहाँ गोपियाँ लक्ष्मी का स्मरण करती हैं। भागवत में गुन गुन करके आने वाले भ्रमर को सम्बोधित करके गोपियाँ अन्योक्ति शैली में अपने भाव को व्यक्त करती है, यही कथा नन्ददास के भ्रमरगीत में भी वर्णित है; किन्तु प्रागन की गोपियाँ ऊधौ को ही भ्रमर का पर्याय मानकर, मधुक अथवा मधुकर सम्बोधित करती हैं। भँवरगीत में कवि यशोदा द्वारा उद्धव को वृषभान के घर राधिका तथा गोपिकाओं की दशा देखने के लिये भेजता है, जबकि भागवत में इस प्रकार की कोई कथा नहीं है। गोदोहन एवं वेणु का स्वर भागवत के उद्धव को ब्रज में पहुँचते ही संध्या समय सुनने को मिलता है, और 'भँवरगीत' में दूसरे दिन प्रातःकाल भागवत में उद्धव के रथ को देखकर गोपियाँ अक्रूर के पुनरागमन की कल्पना करके उनकी भर्त्सना करती हैं किन्तु यह प्रसंग 'भँवरगीत' में समाविष्ट नहीं है।

'भँवरगीत का दर्शन'—भ्रमरगीत पुष्टि मार्गीदर्शन के प्रतिपादन के लिये लिखे गये प्रतीत होते हैं, जिनमें नाथपंथ संतमत एवं अन्य ज्ञानमार्गी सम्प्रदायों के मतवाद का खण्डन अन्योक्ति शैली में प्राप्त है। भ्रमरगीत में मेखली, मुद्रा, अलख, निरंजन, योग, सुरति, निरति आदि दार्शनिक शब्दावली का उपयोग करके उपर्युक्त सम्प्रदायों का दार्शनिक प्रतिवाद इस रूप में किया गया है। शैली भावात्मक होने के कारण वैष्णव भक्तों के मनस्तोष एवं प्रेमाभक्ति के प्रति उनमें निष्ठा निर्माण करने की दृष्टि से भ्रमरगीतकार सफल रहे हैं।

प्रागन के 'भ्रमरगीत' का दार्शनिक पक्ष कृष्ण के इस कथन में केन्द्रित है।

ऊधौ व्रजवासी मोतें नहि न्यारे यह करु निजु परतीत।
हौं निसिवासर वहाँ रहत हौं जहाँ निरन्तर प्रीति।
गोपी अरधंगी हैं ऊधौ कहौं कहाँ को भेद।
घट घट व्यापी हौं पुरुषोत्तम स्वंस हमारी वेद।
ताकी रिचा सकल ये गोपी जैसे सिन्धु तरंग।
जब पूरन औतार धरत हौं तहाँ अवतरत संग।

तथा :—

ऊधौं तो सौ कहौं निरंतर निजभक्तन में रहतु हौं।
वेद अतीत कोउ नहि जानत यहै हमारो मतु हैं।
हौं निरलेप निरंजन निरगुन कारन तैं वपु धारौं।
कर्म रहित हौं अपनी इछा प्रगटत हौं जुग चारौं।
देह अदेह तकौ मति कोऊ ग्यान दिस्टि को कोऊ।
छोड़े देह बहुरि नहि पै हैं जन्म जगत में सोऊ।
यह मत है देवन्ह कहैं दुर्लभ मधुपहिए महँ राखी।
प्रागनि तौसौं फेरि कहौंगे देइ येकादस साखीं।

प्रागन के अनुसार, जहाँ निरंतर प्रेम रहता है वहीं भगवान् विराजते हैं। वे घट घट व्यापी पुरुषोत्तम हैं, जिनके वेद, प्रश्वास एवं ऋचाएं गोपी रूप में अर्धांगिनी और सिंध की तरंग की भाँति पूर्णावतार में साथ-साथ

अवतरित होती हैं। भगवान् वेदातीत निरंजन निर्लेप एवं कर्मरहित हैं किन्तु वह अपनी इच्छा से चारों युगों में प्रगट होता है।

प्रागन की गोपिकाएँ मन, वचन और कर्म से नंदनंदन की आराध्या एवं रसजन्यरास के आनन्द में निमग्न रहने की आकांक्षिणी हैं। वे प्रेम-तृष्णा से तृषित और ज्ञान वैराग्य से दूर हैं। मोक्ष और ज्ञान के स्थान पर प्रेम लक्षणा भक्ति उनके लिए सर्वस्व है निर्गुण ब्रह्म का तत्वज्ञान 'निरस-नीति' है। वे चारों मुक्तियों (सालोक्य) सामीप्य, सारूप्य और सायुज्य :, को भगवान् कृष्ण की मंद मुस्कान पर न्योछावर कर सकती हैं। प्रेमनिधि व्रज में निवास करके उन्होंने प्रेम-महाव्रत को अंगीकार किया है, अतएव वे लोक-वेद तथा मर्यादा के साथ तात, मात, भ्रात एवं परिजनों का परित्याग कर सकती है, उनका हृदय केवल मात्र कृष्ण के प्रति अनन्य प्रेम की अपार धारा से आप्लावित है। प्रागन ने भक्ति के इस रूप को काव्यमयी मोहक भाषा में प्रस्तुत किया है।

भँवरगीत :—साहित्यिक मूल्यांकन

प्रागन का भँवरगीत उपालम्भ-काव्य-परम्परा की गीतात्मक रचना है। इसके लिये पद स्वयं मे पूर्ण मुक्तक एवं शृंखलित रूप में एक व्यवस्थित खण्ड-काव्य का रूप प्रस्तुत करते हैं, भँवरगीत आकार में लघु अवश्य हैं; किन्तु भावों की व्याप्ति, नवमण्डित कल्पना, सहज-भाषा, संक्षिप्त कथानक एवं प्रस्तुतीकरण के सधे शिल्प के कारण उच्चकोटि की रचना है।

भँवरगीत का भावपक्ष सरल और भोली गोपिकाओं के कारण विशेष रूप से आकर्षक है। उनका व्यंग एवं तर्क हास्य एवं परिहास कहीं-कहीं सूर सदृश्य है। व्रज के एक एक स्थल द्रुमलता, पशुपक्षी, जड़चेतन सभी में कृष्ण-प्रेम की छाप है। वे वियोग में कृष्ण के साहचर्य का स्मरण कराते हैं। प्रागन की गोपियाँ जब कहती हैं—"कृष्ण कब आयेंगे, कब आकर यमुना के पुलिन पर पुनः रास रचेंगे। गली-गली में दही का दान माँगते

समय कब हमसे वाद-विवाद करेंगे। वेणुवादनशील गोपाल कब गायों के साथ वन से आयेंगे। हमारे लालची नेत्र बिना मूल्य के ही श्यामसुन्दर के हाथ बिक गये हैं। जो सुख हम चाहती थी, वह कुब्जा लूट रही है, हमारा तो स्वार्थ और परमार्थ दोनों चला गया। कृष्ण के लिए हमने लोक-मर्यादा का भी उल्लंघन किया; परन्तु हमें कुछ भी प्राप्त न हुआ आदि।" कवि ने नंद, यशोदा, राधा की दशा ब्रज के लिए भी नरनारियों का दैन्य, उद्धव द्वारा वर्णित ब्रज दशा तथा कृष्ण की ब्रज-स्मृति सम्बन्धी प्रसंग का वर्णन मनो-रागों के आधार पर अनलंकृत संवेदन-शील एवं भावुक शैली में किया है।

भँवरगीत की सर्वोपरि विशेषता इसमे निहित गीति-काव्य के तत्वों के कारण है। संगीत की दृष्टि से केदार, मालव,गौरी, वसंत, तोड़ी, मारू, माड , कांगड़ा तथा आशावरी आदि रागों का नामोल्लेख मिलता है। राग और भोग पुष्टमार्गी पद्धति में प्रमुख रहे है, जिनके कारण शास्त्रीयगायन के विकास मे इस सम्प्रदाय का सर्वोपरि योगदान रहा है। प्रागन भी अन्य कवियों की भाँति यदि संगीत के प्रवीण एवं ज्ञाता रहे हो, तो कोई आश्चर्य नही। संगीतात्मकता के पूरक गुण, लयात्मकता एवं नादात्मकता भँवरगीत में हैं। कवि ने ब्रजभाषा की मधुर शब्दावली मे सानुनासिक एवं मधुर वर्णों का व्यापक प्रयोग किया है, जिससे नाद और लय की सृष्टि में कोई व्यव-धान उपस्थित नही होता।

डा० स्नेहलता श्रीवास्तव ने प्रागन की भाषा के सम्बन्ध में लिखा है कि "भँवरगीत की रचना जिस भाषा में हुई है, वह ब्रज का अतिसाधारण रूप है। साहित्यिक परिष्कृत एवं परमार्जित ब्रज भाषा का दर्शन इसमें दुर्लभ है। मुहाविरों का प्रयोग कम ही किया गया है। इसमें प्राचीन शब्दों तथा वर्णों का प्रयोग भी स्थान-स्थान पर मिलता है।" श्री भगीरथप्रसाद दीक्षित इसके विपरीत इस सम्बन्ध में लिखते हैं कि "प्रागन कवि की कविता स्वाभाविक, सरल और सरस है। भाषा परमार्जित मुहाविरेदार और मधुर शब्दों से युक्त है।" इन दोनों कथनों में जो अन्तर है, वह प्राप्त प्रतियों के आधार पर किये गये आकलन के कारण हैं। प्रतिलिपि परम्परा में बिगड़

जाने के कारण डा० श्रीवास्तव को प्रागन की भाषा साधारण प्रतीत हुई थी। किन्तु अन्योक्ति, दृष्टान्त, उपमा तथा उत्प्रेक्षा आदि अलंकारों के कारण पदों में भावाभिव्यंजना एवं कथन वक्रता प्राप्त है।

प्रागन कविकृत भँवरगीत एक उत्कृष्ट साहित्यक कृति है जो अब तक पाण्डुलिपियों के रूप में जनसाधारण की दृष्टि से तिरोहित थी। हिन्दी साहित्य सम्मेलन के प्रथम शासन निकाय के सचिव श्री गोपालचन्द्र सिंह की प्रेरणा का यह परिणाम है कि हिन्दी साहित्य के समृद्ध इतिहास की परम्परा में प्रागन का भँवरगीत अब एक कड़ी के रूप में संलग्न हुआ है।

'भँवरगीत' की पाठ-समस्या

सामग्री-परिचय

प्रागन कृत 'भँवर गीत' की कुछ प्राचीन प्रतियों का उल्लेख खोज-विवरणों में प्राप्त है।

डा० हीरालाल द्वारा संपादित १९२३ से २५ के १२वें संस्करण में प्रागन के भ्रमरगीत की ५ प्रतियों का विवरण है:—

(१) संख्या ३१ (ए)—पत्र—५५—आकार—६×४½", लिपि-काल संवत् १८८६ वि०। प्राप्तिस्थान पं० शिवदानी लाल मिश्र, ग्राम मुहम्मदपुर खाला, जि० बाराबंकी, अवध पुष्पिका:—"इति श्री प्रागन कृत भ्रमर गीत समाप्त सुभत्रस्तु संवत् १८८६" फाल्गुन मासे कृष्ण पच्छे पंचाम्यां सुक वासरे। राम राम राम राम राम राम।"

(२) ३१६ (बी)—पत्र-२५, आकार—६½×४½" तिथि—सं० १९०५, प्राप्ति स्थान—राज पुस्तकालय. भिनगा, बहराइच।

पुष्पिका:—"वरवै कातिक शुक्ल एकादसि मंगलवार। बारह सै अरु छप्पन सनतन आर। सुममस्तु लिख्यते। अर्जुन सिंह हाथा पठनार्थ पाडेपाल राम के।"

(विशेष—इसकी प्रतिलिपि हिन्दी साहित्य सम्मेलन में भी है।)

(३) ३१६ (सी)-पत्र-४५—आकार ६½×५" तिथि—१२६९ फसली अथ १८५२ ई०। प्राप्ति-स्थान—ठाकुर श्री गुरुप्रसाद सिंह जी विसेन, गुर्वां, जि० बहराइच।

(४) ३१६ (डी) पत्र-२५—आकार ८×४", लिपिकाल

सं० १८९३। प्राप्ति स्थान—ठाकुर शिवप्रसाद सिन्हा, ग्राम करैला, पो० फखरपुर, जि० बहराइच।

(५) ३१६ (ई)-पत्र—१८—आकार—९½×५½", अपूर्ण, लिपि-काल सं० १९४९, प्राप्ति स्थान—पं० केदारनाथ, उत्तरापारा, रायबरेली।

त्रयोदश-वार्षिक-खोज विवरण १९२६ से १९२८ में दो प्रतियों का वर्णन प्राप्त है :—

(६) ३४७ (ए) पत्र-३५, आकार ५×३" लिपिकाल सं० १८६५, प्राप्ति स्थान-आनन्द-भवन पुस्तकालय, बिसवाँ, सीतापुर।

पुष्पिका:—"इति श्री भौंर गीता समापितं संवत् १८६५ आसाढ़ मासे सुकुल पक्षे एकादिस्यां सोमवासरे।"

(७) ३४७ (बी)-पत्र-सं०-३३—आकार-५¾×३¾", प्राप्ति स्थान-ग्राम-पूरा कोलाहल, डाकघर-माधोगंज, जिला प्रतापगढ़।

पुष्पिका :—"राम, राम राम, राम, इतिश्री प्रागन कृत 'भौंरगीता' श्रीराम मिश्र असनी गंज।"

अन्य प्रतियाँ

ना० प्र० सभा के हस्तलिखित हिन्दी ग्रंथों के विवरणों में सूचित प्रागन कृत 'भँवरगीत' की प्रतियाँ। प्रथम सन् तथा द्वितीय संख्या क्रमांक सूचित करती हैं :

२३—३१६ (ए से ई)
२६— ३४ (ए, बी)
४१—५१७ (क, ख) अ प्र०
४४—२१७ (क से घ) अ प्र०

(अ) आर्य भाषा पुस्तकालय,
नागरी प्रचारिणी सभा वाराणसी की प्रतियाँ

(१) क्र० सं० ७८०

पत्र-संख्या १ से ३४ (पूर्ण)
प्रारंभ—"प्रागिनि कृत भौंर गीता करुना विरहा लिख्यते।
श्री सरस्वती देव्यौ नमः।"
पुष्पिका: "इति श्री प्रागन कृत भौंर गीता। सीरी राम् मीसिर
मनीगंज के।"

(२) क्र० सं० १०८
पत्र-संख्या २ से ४४ (अपूर्ण)
प्रारंभ......द्वि रावरे आनहि।
पुष्पिका: इति भ्रमर गीता संपूर्ण।
श्री गणेशाय नमः!

(आ) अवधी साहित्य परिषद् (हिन्दी-सभा), सीतापुर की प्रति।
पृष्ठ संख्या १६ सपूर्ण।
लिपिकाल सं० १९१०
कुल पदों की संख्या ८३
प्रारम्भ: "श्री गणेशायनमः।। अथ प्रागिनि गीता।। राग आसावरी।
पुष्पिका: "इति श्री प्रागन कृत भ्रमरगीता समाप्तम् सुभमस्तु सं० १९१० भाद्र मासे सिह पछे पौंणिमायां शनिवासरे प्रति लिखित गुलाब पाठक पाठार्थ ठाकुर षंजन सिंह, वासी पालास नाम पुर के।

आधार-प्रतियाँ—बहिरंग परीक्षा

प्रागन के 'भँवर गीत' के सम्पादन में पाँच प्राचीन हस्तलिखित एवं एक संपादित प्रति का उपयोग मैंने किया है। संपादित एवं चार हस्त लिखित प्रतियाँ हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग के संग्रह तथा एक प्रति प्रयाग नगरमहापालिका के संग्रहालय की है। प्रयाग-संग्रहालय की प्रति में प्रतिलिपि-कार का नामोल्लेख नहीं है। यह प्रति संग्रहालय को श्री राधाकृष्ण गोस्वामी द्वारा प्राप्त हुई थी अतएव इसका संकेत 'रा' मैंने स्वीकृत किया है। इसी भाँति सम्पादित प्रति के लिए 'स' चिन्ह मैंने माना है। इन प्रतियों का संकेतसहित विवरण प्रस्तुत है:—

हिन्दी-संग्रहालय, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग की प्रतियाँ

१. (ब) प्रति

वेष्ठन संख्या १९०७। क्र० सं० ३८१९

प्रतिलिपिकार—वदसिंह

प्रतिलिपिकाल–फसली सन् ११९१ (सं० १८४० वि०)

आकार=७"×४"

पत्र-संख्या—२९

दशा-खंडित—पत्र ८ और २५ इस प्रति मे नही हैं।

पुष्पिका:—"इती श्री भँवरगीता पुस्तक प्रागनि कृत . . . माप्ति सुभमस्तु सन् ११९१ साल माघ सुदि" ७ दसषत वदस् सिंह"

२. (द)—प्रति

वे० सं० १२८५। क्र० सं० १९०३

प्रतिलिपिकार—दरुगादीन

प्रतिलिपिकाल—सं० १९३३ वि०

आकार—९.१०"×४.१०"

पत्र-संख्या—२३

प्रति की दशा—खडित पत्र सं० १ इसमें नहीं है।

पुष्पिका:—"इति श्री प्रागन कृत भौर गीत समाप्त"। "संवत्" १९३३" असाढ़ मासे कृष्ण पक्षे चतुष्यां" रविवासरे" लिष्यते दरुगादीन सनाढि अस्थान पिपराये" राम राम राम राम . .

३. (सा) - प्रति

वे०सं०—१९०९। क्र० सं० ३७४७

प्रतिलिपिकाल—फसली सन् १२७६ (सं० १९२५ वि०)

आकार—११"×४.१२"

पत्र संख्या—१९.

दशा—पूर्ण सुलिखित

पुष्पिका:—"इति श्री प्रागनि कवि कृत भाषा भँवरगीता सम्पूर्ण

सुभम् भूयात्। साम्वत् १९२५ शाके। १७९०। मि० फाल्गुण सुदी ॥९॥ सन् १२७६ साल लिख्यते साहेब रामेण। श्री राम राम राम राम।'

४. (अ)—प्रति

वे सं० १३७४। क्र० सं० २२०७

प्रतिलिपिकार—अज्ञात (यह प्रति अर्जुन सिंह हाडा द्वारा की गई प्रतिलिपि की प्रतिलिपि है।)

आकार ११" × ८"

पत्र-संख्या—१३

दशा—आधुनिक कागज पर यह प्रतिलिपि की गई है

पुष्पिका—"इति श्री प्रागनि कृत भ्रमरगीता सन कार्तिक शुक्ल एकादशी मंगलवार वारह सै अरु छपन सनतव आरा सुममस्तु लिखते अर्जुन सिंह हाडा पठनार्थ पाडे नेपाल राम के।"

नगर महापालिका संग्रहालय, प्रयाग की प्रति

(रा)-प्रति

५. ग्रंथ संख्या —३५७।२३२

प्रतिलिपिकार—अज्ञात

प्रतिलिपिकाल—अज्ञात

आकार—९.९" ४.४"

दशा—खंडित, प्रथम पृष्ठ नहीं है-। पत्र और लिपि प्राचीन है।

पत्र-संख्या:—

पुष्पिका:—"इति श्री भ्रमरगीतायां बुध गोपी कृष्णानुसारेण योगोज्ञात्यिः समाप्तः शुभं।"

विशेष—यह प्रति श्री राधाकृष्ण गोस्वामी महाजनी टोला से संग्रहालय को प्राप्त हुई है।

६. सं० प्रति—यह प्रति हिन्दी साहित्य-सम्मेलन के साहित्य विभाग से प्राप्त हुई है, जिसको आधार बनाकर मैंने पाठन्तर अन्य प्रतियों से लिए हैं।

अंतरंग-परीक्षा

प्रागन कृत 'भँवरगीत' की पाठ-समस्या पर (१) पाठ लोप, (२) पाठ-वृद्धि, (३) विपर्यय, (अ) क्रम विपर्यय, (आ) पंक्ति विपर्यय तथा (ई) शब्द विपर्यय तथा (४) पाठान्तर इन शीर्षकों के अन्तर्गत विचार करेंगे।

[१] पाठ-लोप—निश्चेष्ट-मूलों के कारण प्रतियों में पाठ का लोप मिलता है। प्रतियों के पत्रों के अंश-भाग अथवा सम्पूर्ण पत्र के नष्ट हो जाने से भी कृति का पाठ लुप्त हो जाता है। यहाँ केवल प्राप्त पाठ में (क) पद अथवा छन्द लोप एवं पंक्ति तथा (ग) शब्द एवं अक्षर लोप सम्बन्धी स्थितियों पर विचार करेगे।

(क) पद तथा छन्द लोप—छन्द-संख्या ४५ एवं ५१ सा, द अ, व, और सं प्रतियों में नही हैं। ये छन्द केवल रा प्रति में उपलब्ध हैं। इसी प्रकार कुछ छेद ६ सं० ४६ तथा ४८ व, अ और सा, ७९ सा, अ, १० द, रा तथा १३, ७३ अ, ३५, ४० सा प्रतियों में नहीं हैं। अ प्रति में १३वें छन्द के लोप का कारण यह है कि १२वें पद की २ पंक्तियों के साथ १३वें पद की अंतिम चार पंक्तियाँ मिल गई हैं।

(ख) पंक्तियों का लोप—आधार प्रतियों में लुप्त पंक्तियों की स्थिति इस प्रकार है। संकेतित संख्याओं में पहले पद संख्या, ततूपश्चात् पंक्ति संख्या दी हुई है:—

सा-प्रति ७.५ और ६, २५.५, तथा ६५.८, अ-प्रति पद १२ तथा ३से ८ एवं पद १३.१ से ४, द-प्रति २१.५, २२.७, २३.७, २९.२ और ३, ३१.४, तथा ७१.२, रा-प्रति ६५.७ तथा ६७.६, रा-प्रति ८१.६,

७ और ८ द, सा ८१ . ७ और ८ ये पंक्तियाँ मूल-पाठ से विभिन्न प्रतियों में लुप्त हो गई हैं।

(ग) शब्दों और अक्षरों के लोप पर, विस्तारभय से विवरण नहीं प्रस्तुत कर रहा हूँ।

[२] छन्द वृद्धि:—'सा' प्रति के अन्त में निम्न तीन दोहे प्राप्त हैं जो न तो किसी अन्य प्रति में प्राप्त हैं और न इनका विषय ही प्रागन कृत 'भँवरगीत' से सम्बन्धित है। ये प्रक्षिप्त छन्द यहाँ उद्धृत हैं।

(१) फिरि नर देह विभौ सहित होनो दुस्तर नाहिं।
हरि भजि सजि परलोक तप अकथनषो बहुताहि॥

(२) रहिबे को तन धन नही कछु नहिं चलिहैं साथ।
कछु साज नहि संग चलिहि जोगवत रहत अकाथ॥

(३) ढिढ वे खैवो धर्म तप अंत होत हित येह।
इत याही उतवास है सुख चाहै करि लेइ॥

[३] विपर्यय—भँवर गीत में (१) क्रम-विपर्यय (२) पंक्ति-विपर्यय तथा (३) शब्द-विपर्यय की स्थितियाँ हैं।

(१) क्रम-विपर्यय-खोज विवरण (१९२३ से २५) सं० ३१६ (ए) में वर्णित 'भँवरगीत' की प्रति में प्रथम पद द्वितीय पद के स्थान पर एवं तदनुरूप द्वितीय पद प्रथम है। इसी प्रकार रा प्रति में निम्नपद १७—२७, २२-२४, ७९-८१ तथा ८०-८२, के स्थान पर मिलते हैं। द और रा दोनों ही प्रतियों में दोहा ४०—३९ के स्थान पर है। दोहा ४७ व और अ में ६४वें दोहे के बाद आया है।

(२) पंक्ति विपर्यय—अ प्रति-पद २४ की पंक्ति २-३, द-पद २५ पंक्ति २-६, के स्थान पर हैं। पद ३१ पंक्ति ६ द, रा प्रतियों में अन्तिम है। रा, सा प्रतियों में पद ३१ की पंक्ति २ के स्थान पर है।

(३) शब्द-विपर्यय—'भँवरगीत' में शब्द विपर्यय के निम्न उदाहरण प्राप्त है—

स्वीकृत पाठ	विपर्यय
हम हैं २.३	मैं हौं, सा
बरन बसन ३.७	बसन बरन, सं
लैकरि ऊधौ ५.२	ऊधौ लै करि, रा
कान्ह कियो ९.२	कियो कान्ह रा, किये कान्ह, द
इहै उचित १३.३	उचित इहै सा, उचित यहै, रा
आवै स्वारथ १..६	स्वारथ आवै, सा
प्रगट भये २५.५	भये प्रकट, रा
कहियो यतनी २७.१	यतनी कहियो, द
मीन कहाँ ३५.२	कहो मीन, रा
कहौ मधुप ५३.१	मधुप कहो, द
मोहन कछु ६६.७	कछु मोहन, सा
चारु चरन ७२.७	चरन चारु, से
आयो धावन ७५.३	धावन आयो, सं०

[४] पाठान्तर—प्रागन कृत भँवर गीत के प्रमुख पाठ-भेद निदर्शनार्थ प्रस्तुत हैं:—

स्वीकृत-पाठ	प्रतियों का पाठ
सिद्ध १.२	शुद्धि सा, सिद्धि अ, सीद्ध व
संजम १.८	संगम सा, संभ्रम रा
वयसहु सर्व समान ३.७	बैठे सषा समान सं
चर्चाहिं सिगरी रैन सिरानी ७.१	चर्चा ही मैं निसा सिरानी द, रा, स
छूटे मघुप ७.५	छोटे मघुप द, सा, सं०
लाई लाल १०.५	लाई लाज सं०
कहँ विथा १५.७	का वृथा सं०
कुंमरो ३०.८	कुलेंडो सं०, कुम्हेडो द, कुह्मडो रा

जदपि कहत हौ ४४.१	बादि बकत हौ, द
जल चारिन ६७.७	जलबासिन सं०, जलधारिन, रा
बन चारिन ६७.७	बन वासिन सं०
केतिक कटुक कही हम तुम सौं ७०.६	केति बात कही तुमही सोंस केतो कछुक कही तुमहीं सोसा
विदित घर के दुषित पीडित	बकत घर के देखि खिझत
यहै उपजी बाइ ८०.८	हिये उपजी बाइ आदि

प्रतियों का सम्बन्ध—प्रागन कृत भँवरगीत की व, सा, द, अ और रा प्रतियों का अंतरंग परीक्षण करने के उपरान्त पाते हैं कि ये प्रतियाँ दो वर्गों में विभाजित की जा सकती' है (१) व, सा, और अ वर्ग (२) द और रा वर्ग। ये प्रतियाँ परस्पर प्रतिलिपि संबंध से जुड़ी नही हैं किन्तु इनकी पृथक निकटस्थ पूर्वज प्रतियाँ एक ही है। इसका निर्धारण समान पाठ और संकीर्ण सम्बन्धों के आधार पर संभव है। इनके उदाहरण छन्द और पंक्ति लोप, राग-भेद, तथा पाद टिप्पणी में दिये हुए पाठान्तरों से हम प्राप्त कर सकते है।

संपादन-सिद्धान्त—सभी प्रतियों मे प्राप्त पाठ के अतिरिक्त दोनों वर्ग की भिन्न भिन्न प्रतियों में प्राप्त संगत पाठ को स्वीकृत किया गया है। पद और छन्द की मात्रा वृद्धि सम्बन्धी त्रुटियों से बचने का भी मैंने प्रयास किया है। भाव, भाषा और लय की दृष्टि से प्राप्त संगत पाठ सर्वत्र स्वीकृत किए गए हैं। अधिकतम प्रतियों में प्राप्त शब्द रूपों को ही रखा गया है। 'व' प्रति जो अन्य प्रतियों से प्राचीनतम है, उसका तथा 'रा' प्रति जिसमे मूल-का पाठ कुछ अधिक भाग सुरक्षित है दोनों प्रतियों का विशेष उपयोग प्रस्तुत संपादन में हुआ है।

: १ :

राग बिलावल

आयसु दीन्हों सखा सुजानहिं।
स्यंदन चढ़ौ सिधारौ बृज को सिद्ध[१] रावरी आनहिं॥
कैसे हैं जसुदा जननी जिन्ह, पालि कियो परवीन।
मोहि आछत अब होत होहिंगी परपूतन आधीन॥
गहियो पायं नंद बाबा[२] के, कहियो यहै संदेसो[३]।
जो तुम कियो महाकृत हमसों, गनि न सकत गुन सेसो॥
समाधान कीजेहु गोपिन[४] को, दीजो निर्मल ग्यान।
कहियो, जोग जुगुति[५] सों 'प्रागनि' त्रिकुटी[६] संजम[७] ध्यान॥

---

(१) १. सुद्धिस। सिद्धि अ, सीद्ध व। २. ववा व। ३. सनेसो सा। सदेसो ब, ४. गोपिन्ह सा आ ५. जुक्ति सा। ६. श्री भगीरथ प्रसाद दीक्षित के लेख में 'त्रिपुटी' है। ७. संगम सा। संभ्रम रा।

: २ :

राग सारंग

सिख निजु गाढ़े के[१] गहियो।
पालागनि[२] दोऊ भैया को[३] मैया सों कहियो ।।
हम[४] हैं तिहरे पै[५] के पोषे सुरति करति[६] रहियो।
जोग[७] संदेस[८] सुनाइ तियनि[९] कों प्रीति रीति लहियो ।।
कहियो कछु न फेरि उनहूं सो कहै सो सब सहियो।
सीतल बचन सींचियो रस सों, दही न फिरि दहियो ।।
देखि दसा उनकी मोहू को[१०], दोष दियो चहियो।
'प्रागनि' वृजवासिन[११] के हिय को प्रेम सिंघु थहियो ।।

(२) १. करसा, अ। २. पालागी सा। ३. की सा, अ। ४. मैं हौं-स। ५. पय अ। ६. करत सा, अ। ७. योग अ। ८. सनेस सा। ९. त्रियन अ, सा। १०. उन्हहूँ कौं मोहू सा। ११. व्रज बासिन्ह आ, सा।

: ३ :

राग सारंग

• चरन गहि ऊधौ सुनत सिधाए[१]।
रथु हाँको पथ चलत न जानो[२] गोधन संग वृज आए[३]।।
परसी रेनु बेनु स्रवन[४] सुनि सखा धेनु[५] निहारी।
जे अपने कर पीतांबर सों पोंछी कुंज विहारी।।
परिकरमा कीन्ही[६] नंदग्रामहिं रहसत पुर से पैठे।
बूझत पौरि[७] नंद बाबा के[८], द्वार उतरि हँसि[९] बैठे।।
भूषन बरन बसन[१०] बपु एकै, वयसहु[११] सखा समान[१२]।
'प्रागनि' सुनि जसुदा[१३] उठि धाई इन्द्रिन्ह पायो प्रान।।

---

(३) १. सिधायो सा, रा। २. जान्यो रा। ३. आयो सा, रा। ४. स्रवननि रा, सा। श्रवनन्ह अ। ५. सखा औ धेनु अ। ६. दीन्ही रा। कीन्हो व। ७. पाँवरि अ। ८. की रा। ९. हरि व, अ। १०. बसन बरन स। ११. बैठे व, स। १२. सर्व रा, अ।१३. जसोदा रा। जसुमति सा।

: ४ :

राग नट

गई लै भीतर नंद की रानी।
हरि को सखा जानि पायन को[१], आपुहिं लाई पानी॥
आये को आतीथ जवन विधि[२], सो सबु जसुमति कीन्हों।
आसन ते लै[३] असन अंत लौ, अति आदर करि दीन्हो॥
बूझी[४] कुसल राम केसो की, नैन नीर भरि आए।
छाँडी कानि कन्हैया मेरी, मनहुँ मधुपुरी छाए॥
तीजे पन जहँ पूत चाहियत तहँ ते दीन्ह बिसारी।
धाहिहु के नाते नहि 'प्रागनि' लीन्ही सुद्धि हमारी॥

---

(४) १. सौधु जानि कै व। साधु जानिकै सा। जा पाएव को रा। २. आवा है कोउ अतिथ जवनि विधि सा। आये को आतीत जवने विधि अ। आये को अतित्थु जैसी विधि रा। ३. दूं सों सा। ते है रा। ४. पूंछी सा।

: ५ :

रागिनी आसावरी

तेहि छिन[१] नंद खरक[२] तें आए।
लोचन सजल पुलकि तन लै करि, ऊधौ कंठ[३] लगाए॥
ता पीछे बैठे यक आसन समाचार अनुसारे।
नीके हैं बसुदेव देवकी प्रीतम परम हमारे[४]॥
नैंन जोति वृजजोति सबनि के नीके हैं बलिकेसो[५]।
कहि धो[६] तात कबहिं[७] आवहिंगे[८] कछु औ[९] कहौ संदेसो॥
बड़े सपूत भए 'प्रागनि' प्रभु कोविद परम कहावै।
वचन तात हम भए मनहुं[१०] तें तौ अैसो दुख[११] पावै॥

---

(५) १. ताछिन द। २. खरिक सा, रा। ३. ऊधौ लै करि रा। ४. प्रान अ, व, सा। ५. कुसल छेम बल केसो द। ६. कहियो स, अ। कहिये द। ७. कबहु रा। कबे अ, कान्ह कब, द। ८. औहैं द। ९. कहु औरौ अ। कहुयै सा। कहु धौ, रा। १०. मात पितु रा। भयमानहु तेहि अ। भये मानहू द। ११. अब बहुतै रा।

: ६ :*

राग मालव

जिय जिय ऊधौ लागि बिचारी।
करुनामय सर्वग्य कहावत, बड़े निठुर गिरिधारी॥
प्रगट न करौं[१] मनहिं में राखौं, पै[२] बहुतै दुख पायो।
ता पीछे सन्देस कान्ह को, मधुकर[३] यहै[४] सुनायो॥
हौं गोपाल तिहारी सब दिन, बेचौ[५] तहां बिकाऊं।
जुग जुग अचल रहैगी कीरति प्रतिपालै कौ नाऊं॥
बातन समाधान काहे को जाको सर्बस जात।
'प्रागनि' बिकल पानि के प्यासे वोसन[६] कहा अघात॥

---

(६) १. करै रा। करो व। २. हिय सा। ३. कोऊ सा। ऊधो सं
४. बिनै सं। विनय अ। ५. बेचो, सा। बेंचो अ।
६. राग मलार अ०, सा। आसावरी रा।

: ७ :

राग गौरी

*चर्चहिं सिगरी रैन सिरानी[१]।
चारौ[२] जाम चरित मोहन[३] को, कहत रही नंदरानी॥
भोर भये बोले पुर तमचुर, मुखरित[४] विपुल[५] बिहंग।
सुबल[६] सुबाहु कृस्न की लीला, कहत[७] आपने रंग॥
छूटे[८] मधुप कंज[९] कोसन ते, करत मधुर सुर[१०] गुंज।
मानहु वृजवासिन को बंदत भेष धरे मुनि पुंज॥
गो-दोहन, मथान[११] वेनुरव[१२] लाग्यौ चहुँ दिसि होन।
'प्रागनि' गोपी गुन गोपाल के करत गान[१३] प्रति भौन॥

---

(७) १. चर्चा ही सर्बरी सिरानी व। चर्चा ही मैं निसा सिरानी द, रा, सं। २. चारिहु अ। ३. गोविद द, रा। ४. मुकुलित व, अ। मकुलित सा। ५. विपिन रा। ६. मुबस रा, । ७. करत द, रा। ८. छोटे द, सा। ९. कुंज रा। १०. रव द। ११. गो दोहन मंथन अ। १२. धेनु सं। १३. वाइ रा।

: ८ :

राग आसावरी *

हरि जननी जिय ही सों[१] जानी।
श्री गिरिधर के सखा साधु तें, कही भावती बानी।।
पगु धारौ वृषभानु भौन लौं, समाधान के हेत।
देखौ[२] दसा सकल गोपिन की, श्री राधिका समेत।।
मन माधौ[३] के तीर मधुपुरी इहां रहत तन छीन।
अैसी ह्वै जो जियत आजु लौं[४], बचन अवधि आधीन।।
ताते "प्रागनि" बार बार हौं, इहै सिखावन देत।
कहियो धौं[५] तात[६] कबहिं[७] आवहिगे, प्रान रहन के हेत।।

---

*गौरी ब।

(८) १. की सं। ये अ। सो द, रा। २. देषी सा, आ, रा। ३. मनु माधौ सा, द, रा। ४. याते द। ५. कहियो अ, रा। ६. कान्ह सा, द। ७. इहाँ सा, द।

: ९ :

राग कल्यान

•सिख सुनि सखा सिधाये[१] तिन[२] पै।
रास विलास बास बृंदाबन कियो कान्ह[३] मिलि जिन[४] पै॥
बीच मिली आवत ही गोपी[५], सुधि पाई नंद ग्रामहिं।
भूषन बसन देखि सिरु नायो, अरु बूझत[६] हैं नामहिं॥
भरि दीन्हों चख नीर[७] निरखि कै, सुधि आई सब फेरि[८]।
गई सिथिल ह्वै भई·प्रेम बस, रही सखा तन हेरि॥
देखि दशा बोले सुफलक[९] सुत, रहौं[१०] मधुपुरी गाउं।
हौं सेवक बसुदेव सुअन को जन[११] ऊधौ मोहि नाउं॥
यह सुनि त्रिया फेरि बूझत है श्री बलदेव पठाये।
दरसन कों तरसत[१२] हैं लोचन, भली करी[१३] इत आये॥
•नीके नंदकुमार रहत हैं, हमरे प्रान निकेत[१४]।
"प्रागनि" प्रगट देह देखत हौं, वचन अवधि के हेत॥

---

(९) १. सिषायो रा। २. तिन्ह सा, अ। ३. स्याम कियो सा। कान्ह कियो सं। किये कान्ह द। ४. जिन्ह सा, अ। ५. गोपी अवत ही रा। ६. पूछत द। ७. चिन्ह रा। चीर सा। नीर द। ८. आई सुधि सब केरि अ। आइ सुधि बुधि केरि ब। ९. सुपलक द। उपलकु रा। १०. कह्यौ ब, अ। कहौ रा। रहौ द। १०. है रा। ११. कलपत द। १२. जो सं। १३. प्रानन के हेत रा।

: १० :

राग भोपाली

बंसी की कुसल कहौ, मोहन की[१] पाछे।
जाके प्रभु वस्य भये कुबिजा है आछे?
कौन रीझि रीझे स्याम, सोई निजु[२] भाखो।
उनहीं की सपथ मधुप, अंतरौ[३] न राखो।।
कौन लागि लाई लाल[४], छांड़ी हम बालें।
कबहूं बृज चरिचा हरि, झूठहूं न चालैं।।
सुनहुँ मधुप एक बात, दुख में यह[५] हांसी।
"प्रागनि" प्रभु परम चतुर डहके[६] पै दासी।।

---

(१०) १. के सा। २. नित सा। निसो जो अ। ३. अंतहू सा। ४. लाज सं। ५. है सा। ६. डहक्यौ सा।

: ११ :

राग आसावरी *

जिय में कहत गोपिका धन्य[१] ।
मन बच काय नंदनंदन सों[२], जानत नाही अन्य ।।
भूषन बसन तजे अंगनि के[३], सजे उरन सिक बन्य[४] ।
बूझत नाम जसोदा सुत को, सूझत वृंदारन्य ।।
बंदत गुननवाद कबहुंक[५] मिलि, सुखद रास रसजन्य[६] ।
"प्रागनि" प्रभु गिरधरहिं[७] उपासी दृढ ब्रत गहै[८] अनन्य ।।

---

*गौरी रा।

(११) १. जिय मौ रहत गोपी का ध्यान रा। २. मन करम वचनतजे नन्द नन्दन अ। मन वच काय नयन देता रा। ३. बिविधजे अंगन रा। ४. सजे उरनसिक वन्य व। साजेउ सिबवनि धन्य सा। सजे उपरनासक बन्य रा। सजे उरनि सिक वन्य अ। ५. कबहिक न स। सबहिक अ। ६. राजन्य अ। ७. गिरिधरन सा, द। गिरिधरए रा। उपासक सा, अ। ८. करै रा। गेह अ।

: १२ :

राग आसावरी*

कठिन परी ऊधो को आनि।
उत अग्यां सों[१] कहो चहतु हैं, इतै[२] प्रेम की खानि।।
दिढ ब्रत को परताप[३] इतै उत, पठयौ[४] जोग संदेस।
चरचा ही मों सिथिल सखा इत, होत जात आवेस।।
इत वै[५] बेद रिचा आपुन हीं[६], कहत प्रगट ही माय।
बोलत जुगुति[७] रही ऊधौ की, ज्यौं पयार के पाय।।
हारे हिये तियन हूं[८] जाने, सबन गहे पग[९] धाय।
"प्रागनि" प्रभु कों देत चुनौती[१०] जीति जांहि इत आय!

---

*सारंग रा।

(१२) १. तें सा। ते अ। २. इताँहि सा, द। इतें रा। ३. परभाव द। ४. सीषो द। सिषा रा। ५. मो सा। ६. ए रा। ७. जुक्ति सा। ८. हिय सब तिय ने सा। हिये जियन हू द। हिये जियन्ह रा। ९. पद सा। १०. चुनौटी व।

: १३ :

राग सारंग

मों कों निपट गंवारु न जानौ।[1]
जो प्रभु कही कहा[2] सो चाहौं, जिय में बिलगि न मानौ[3]।।
तुमको इहै उचित[4] है गोपिहु, बचन सीस धरि लीजै।
करत अवग्यां जात पतिव्रत, विहित होइ सो कीजै।।
वै निःहकाम सकाम भजी[5] तुम, रज तम के अनुमान।[6]
बिना भूमि जल पाहन ऊपर, चहत जमायो धान।।
करौ प्रधान सतोगुन[7] सुंदर[8], धरो जोग[9] को ध्यान।
"प्रागनि" तौ प्रभु भले[10] पाइहौ जौ सिखिहौ यह[11] ग्यान।।

---

(१३) १. जानहु द, रा। २. कही कही व। कहो कहो रा। ३. मानहु द, रा। ४. उचित इहै सा। उचित यहै रा। ५. भई रा। ६. मृगजल के अनुसार अ। ७. सत्यगुर रा। ८. सुंदरि सं। ९. जोति सा, व, द अ। १०. भलेहि रा। ११. यहु सा।

: १४ :

राग आसावरी *

ऊधौ, बृज की गैल नियारी[१]।
वेद पुरान उलंघन कीन्हों, श्री सरबर गिरिधारी॥
हम[२] तौ है[३] गुन माहिं[४] पावती, जो तुम कहत अपार।
सावलिया[५] तिरभंगी मूरति, करत मुरलिकाचार॥
तम प्रगटित उत्कंठित ह्वै[६] हम, करती लोचन पंग।
जित रज उड़ै[७] तितहि अवलोकित गोविद गाइन[८] संग॥
यह तो कथा प्रगट है ऊधो, सुनी होइगी स्रौन।
जग्य भाग तजि जूठन खाई, रही बेद विधि कौन?
औरो करी गुप्त[९] जो मोहन, श्री जमुना के तीर।
वै जानत की हम जानत है, प्रगट करै को बीर[१०]?
अमरादिक[११] को दुर्लभ ऊधो, जानत नाहिन[१२] कोई।
"प्रागनि" बृज सुख सोइ जानिहै, रास रसिक जो होई॥

---

*बसंत अ।

(१४) १. निनारी द, रा। २. हौ तौ द। ३. दो रा। ४. महा अ। ५. सांवरिया रा। ६. हत हम रा। हम तौ द। ७. उठै रा। ८. गौवन द। ९. गुप्त करी जो सं। १०. वीर रा। ११. इंद्रादिक रा। १२. नाही सं।

: १५ :

राग तोड़ी

तातें बिलग कहा हम मानहिं।
विष के जीव[१] कहां जानहिंगे, अंवृत[२] के अनुपानहिं॥
लोचनहीन रूप का देखहिं, बहिरो कहा सुनिहिंगो[३] गानहिं।[४]
अंतरगति अभिलाष कहन[५] को, वचन हीन कह मूंक[६] बखानहिं॥
ऊधौ[७] बात कहां लागतु है, जो खरि खाहिं[८] खांड़ का जानहिं।
जौ लगि पूरो अंग न जानत,[९] तौ लौं सीखि[१०] सिखावत आनहिं॥
रस लंपट कहँ[११] विथा[१२] जानिहैं, बिनु उर बेधे[१३] बिरह के बानहिं।
"प्रागनि" कै तुम कै हम अैसी दुविधि हिये दूसरी ठानहिं॥

---

(१५) १. बीज रा। २. आमृत द। ३. सुनैगो द, अ, रा। ४. कानहि रा, सं। ५. करुन अ। ६. बचन बिना कह मूक द। तासु का मूक सं। ७. दुविधि व। ८. षात द। ९. लागहिँ सा। १०. सीख सं। सीषि रा। ११. का सं। १२. व्यथा अ। वृथा सं। १३. उर भेद द। उर भेदे रा। उरबेष सं।

: १६ :

राग धनाश्री*

ऊधो तुम अधिकारी नहिं[१] बृन्दाबन सुख के।
ताते अनबेधे बलि बिरहानल दुख के।।
पसु पक्षी द्रुम[२] बेली[३] नर नारी जेते।
जिन लौ अवलोके सुख,[४] हरि बिरही ते ते।।
सुखद चारु चितवनि पर कोटि मुक्ति[५] को है?
मुरली रव भव सुक सनकादिक[६] मोहै।।
मोहन मृदु बचन[७] बोलि, करषत है हीयो।
मंद हास भू[८] बिलास, सर्बस हम दीयो।।
अंतरगत पीर बीर, और कौन मानै।
प्रसव सूल सकट कौ बध्या का[९] जानै।।
"प्रागनि" प्रभु जितहिं तितहि, आगे हरि हैये[१०]।
अब जो तन पतन[११] होत, कान्है ह्वै जैये।।

---

(१६) १. नाहिं सा। नाही। नाही अ। २. मृग सा। ३. बल्लरी रा। ४. अवलोकी सुषदअ श्री अवलोको रा। ५. चारि मुकुति रा। ६ भव सोकादिक रा। सुकादि सनकादिक अ। श्रवनन सुनि सनकादिक द। ७. बैन सा। ८ भू सं। ९ कहद। १० अैये द। ऐंहैं रा। ११. पात द, रा। तपन अ।
*भैरो द

: १७ :

राग नट*

*मधुकर, हम न समुझि हैं ऐसे।
बिनु अभ्यास, बिना स्रम सेवा[१] उपदेसत हौ जैसे।।
जाको गम्य नही जागुन[२] में, कहि आवत धौ कैसे।
ग्यान विहून[३] स्वांग के जोगी, तेऊ बकत है जैसे[४]।।
पोषे कान मुरलिका[५] रस के, नैंन सांवले रूपहिं।
उझकै कौन बिना स्वारथ को, जोग[६] अंधेरे कूपहिं।।
मन सानो[७] रस रास रसिक के, सगुन चरित्र अनूपहिं।
चित्त चुभ्यौ "प्रागनि" प्रभु सो अलि, स्याम काम के भूपहिं।।

---

(१७) १. जाने रा। २ प्रागुन अ। ३. विहीन सं। ४. तैसे रा, सं। ५. मुरलिया द। ६. लाग—रा। ७. सान्यौ सं।
*विशेष—यह पद रा प्रति में २७वें दोहे के बाद है।

: १८ :

राग मलार*

मधुकर,[१] कब ऐहैं गोपाल।
जोग सोग की बात रहन दे यह चरचा कछु चाल॥
कब मोहन फिरि रास रचहिगे[२] श्री जमुना के कूल।
सैन हेत कब तल्प रचहिंगे[२], तोरि तोरि द्रुम फूल॥
दान गली[३] कब दान मांगिहैं, कब[४] करिहैं बकवाद।
गोधन संग सांझ कब अैहैं, करत मुरलिकानाद॥
ऊधौ यह[५] सुख बहुरि होइगो, जब ऐहैं गोपाल।
"प्रागनि" तब कूबरी सौति को, हिए मिटैगो साल॥

---

(१८) १. ऊधौ रा। २. रचैंगे सं। ३. गली गली अ। ४. हम सं। ५. वह सा।

*सारंग द

: १९ :

राग बसन्त

• मधुकर, उनही[१] लागि कहौ।
अहंकार बस पक्ष[२] न पालौ, मोपै[३] कहा चहौ॥
सिख को और[४] सिखावन सिखवै[५] आपु आन[६] कछु भेस।
लागै कहो कहा ते हितकर ता गुरु के उपदेस॥
बिनु[७] बूझे जो कहै आपु तें, सुनत नहीं कोउ[८] स्रौन।
बिना भूख को भोजन बहुबिधि, आवै स्वारथ[९] कौन ?॥
बिना प्रेम की प्रीति जवन बिधि, बिनु परमिति को वास।
आदर बिना पाहुनो जैसे[१०], बिनु चाहे को दास॥
जैसे[११] लोक वड़ाई कारन, करत[१२] सकामी जाग।
तैसे[१३] 'प्रागनि" जानि लीजिये[१४], बिना[१५] ग्याँन बैराग॥

---

(१९) १. उमहि रा। २. पसु पछि द। ३. यामें कह सं। याते कह रा। ४. आन द। ५. सीपो द। ६. आन और द। ७. बिनु सं। ८. जौ रा। ९. आवत स्वारथ रा। स्वारथ आवै सा। १०. जैसो द। ११. ऐसे रा। १२. चहत अ। १३. ऐसे अ, रा। तैसे सा। १४. लीजियो द। लिये रा। १५. बिन रा।

: २० :

राग सारंग *

मधुकर, यह विपरीति कहत हौ।
हौ तुम चतुर, चतुर मथुरापुर, चतुर समाज रहत हौ।।
दीपक बरै बारि-के[१] नाये, बुझै[२] अगिनि घृत धार।
तब कबहिंक[३] वृज की जुवतिन सौं परै जोग[४] ब्रत पार।।
जोगी जोग त्यागि[५] रस भोगवै,[६] भोगी भस्म लगावै।
तब हमहूं जोगिनी भेस धरि, अलख निरंजन गावै।।
निबहै नहिं गिरगुन नारिन तें, सुनौ मतोमत[७] सौं[८] का।
देखी सुनी कहूं है[९] "प्रागनि" चलै नीरं[१०] बिनु नौका ?।।

(२०) १. नारि रा। २. बुझहि अ। ३. कबहूं द। कबहीं सा। ४. जोग जुगुति रा। ५. छाडि द। ६. भुगतै द। भुगते रा। ७. मतो य ह द। ८. सव का स। सवक रा। सोका व, अ। ९. कहो है व। कहय रा। १०. वारि रा।
*आसावरी द। नायकी व, अ

: २१ :

राग नायिकी

मधुकर, मन में[1] सोचि कहौ।
देस काल आनौ उर अन्तर तुम सरबग्य अहौ[2]॥
जिन्ह के[3] अंग लगावत मलया[4], लागत[5] अनल[6] समान।
तिन्ह-को[7] करत[8] प्रलेप गरल को, यह है कछु प्रमान[9]॥
संजम नेम कहा नारिन में[10] प्रेम तृषा रत आहिं।
राखत हौ कुसुमनु[11] पर कुलिसहिं, बिहित विचारत नाहिं॥
यक[12] हम परी विरह वापी में, "प्रागनि" अगम[13] असूझि[14]।
सो मूंदत हौ जोग जंत्र[15] दै, यहै तिहारी बूझि[16]॥

---

(२१) १. मन को सा। मनसे अ। २. यामे कहा चहौ द। ३. जिनके सं। ४. मलयज सं। ५. विरह अ। ६ अग्नि रा। ७. तिनको सं। ताको सा। ८. करौ द। कहत अ, रा। ९. को कह परमान व। यह है कहा प्रमान अ। १०. धो स। से अ। ११. कुसुमनि रा। १२. इक सं। एक रा। १३. लागति अ। १४. असूझ सा, द, अ, रा। १५. पत्र सा। १६. बूझ सा, द।

: २२ :

राग मांड*

मधुकर, यह[१] सुनि को सचु[२] पावै।
विरहानल[३] अरु क्रोध अगिनि[४] मिलि, अधिक अधिक तन[५] तावै ।।
वै तो निठुर न्याइ निरगुन हैं, तुम कैसे कहि आवै।
पवन अधार[६] मेखली[७] मुद्रा, राधा भस्म लगावै[८] ।।
मंदर धरै मराली सिर पर, तुम्हें विहित जो भावै।
पढ़ि विद्या जो पंडित भूलै,[९] ताहि कौन समुझावै ।।
प्यासो मृग तृस्ना के पीछे, जो प्रागनि जु[१०] धावै।
तैसो[११] मधुपैं हमारो स्वारथ, को निरगुन मनु[१२] लावै ।।

(२२) १. वह रा। २. सुष रा। ३. बिना अनल द। ४. अग्नि सा। ५. तव रा। ६. पौन आहार रा। ७. मेषला सा। मैखला ८ भसम चढ़ावै द। ९. पंडित जो भूलै स। १०. जैसे प्रागनि सं०। प्रागन मगु धावै रा। ११. तैसे सं। ऐसो रा। १२. मन से। विशेष :—यह पंक्ति द प्रति में नहीं है।
*सारु व

: २३ :

राग मलार

मधुकर, आवत लाज न स्यामहिं।
जन्म पत्रिका हाथ हमारे,[१] जानत हैं कुल नामहिं॥
दामोदर सो नाम[२] कहावत,[३] हम पूजत ता[४] दामहिं।
सखी समाज रहत[५] उनहूं के, ध्यावत सदा[७] त्रिजामहिं[८]॥
द्रिष्टि भई अब जोग सिखन को, सेये कुबिजा बामहिं।
इत तो[१०] ध्यान दिवा[११] निसि उनको[१२], श्रीराधा[१३] के धामहिं॥
जथा[१४] जोग अब सुनहु[१५] नाम हूं[१६], मिलिकरि करहु विरामहि।*
"प्रागनि" जहं लौ[१७] रस लंपट है,[१८] चतुर आपने कामहि॥

---

(२३) १. हमारो अ। हम तुमारे रा। २. नाउँ रा। ३. प्रगट भयो द। अगर भौ रा। ४. जो द। है रा। ५. सहित द, रा। ६. नित रा। ७. सरद द, रा। ८. ब्रज आमहि रा। ९. इष्ट सा। द्रष्टि द, रा। निष्टी अ। १०. उत को द। इत को रा। ११. ध्यानु दयो रा। १२. नित इतको द। १३. श्री राधिका द। १४. यथा रा। १५. मुनी सा। सुनो अ। आनौ रा। १६. मनमाहा रा। १७. जहँ लगि सा। जह लगि द। जलौटा। १८. तेरा।

***विशेष यह पंक्ति द प्रति में नहीं है।**

: २४ :

रागिनी नट

मधुकर, मिटै सुभाउ[1] कहां तें ?
तुमही कहौ होत हैं न्यारे[2], घूम कृसानु महा तें ?
पालत काग[3] पुत्र हित करिकै, सावक[4] पिकहिं[5] सदा तें[6]।
आवत हीं रितुराज रीति रत[7], भये सचेत जहां तें[8] ।।
पन्नग करै[9] पियूष पानि जौं[10], तैसेहि[11] विष अधिकारी।
लता लता डोलत लोलुप[12] अलि, यह आचरन[13] तिहारी ।।
करौ पिता द्वौ प्रकट सांवरे,[14] औरन को यह गारी।
"प्रागनि" और[15] कहां लौं कहिए, कारन[16] की करनी कारी ।।

---

(२४) १. सुभाव सा, द, अ, रा। २. न्यारो सा। ३. कागु रा। ४. सेवत सा। सेवकि रा। ५. पिकै सा। पिकहु अ। ६. हिया तें सं। यहाते द। ७. रति रतव। रितुन की द। रीति रस सं। ८. तहाँ ते सा,। जहां ते द, रा। ९. करत रा। १०. पान ज्यौं सं, द। पानि इव मा। पानि जो अ। पान जो रा। ११. त्यों त्यों सं। तैसो द। तरु सो रा। तैसे व, सा। १२. लोलप व सा रा। लोलत द। १३. आचरण सा। अचर्जन रा। १४. सावरे द, सं। साँवरो सा १५. बान सा। १६. कारेन अ, रा।

: २५ :

राग सारंग

मधुकर[1], तुम रसलपट परतच्छ।
लागै नहिं[2] उपदेस तिहारौ, कलपि कहौ[3] जो लच्छ ।।*
करि करुना जो गये[4] मधुपुरी. उन मोहन पै[5] गच्छ।
अब तौ[6] भये भूप[7] कुविजा के[8], इहा[9] चरावत बच्छ ।।
प्रीतम प्रगट भये[10] दासी के, बहुत कहावत दच्छ।
"प्रागनि" प्रभु हारे वाही सो, मनहु[11] खेलि कै[12] अच्छ ।।

---

(२५) १. मधुप स। २ लगै नाहि द। लागे नहि रा। ३. कोटि करौ द। ४. फिरि गए रा। ५. मै सा। पे द, रा। ६. जे अब द, रा। ७ भूप भये स०। ८. कुबरी जाके रा। ९. रहे द। यहा अ। १०. भये प्रकट रा। ११. सोमानौ रा। १२. बेलि करी ए रा।

*विशेष :—यह पंक्ति स्ता प्रति मे नही है। द मे यह अंतिम पंक्ति है।

: २६ :

राग मलार

मधुकर, हमहिं बावरी जानत।
पूरन ब्रह्म कहत हो काको[1] कान्ह कहा करि[2] मानत॥
कारन तें एई[3] करुनामय, प्रगटत जुगन[4] चहूं हैं।
हँसि हैं साधु[5] सुद्धि[6] जब दैहैं[7] द्वो जगदीस कहूं हैं॥
माटी खाय[8] कहा दिखरायो, कहियो अविनासी सों।
बिसरि गयौ परिमान आपनो, करि प्रसंग दासी सों॥
हम सब[10] परसि भई[11] कछु औरे, तुम[12] करि परस भुलाने।
"प्रागनि" प्रभु प्रभुता न रही कछु उपदेसहिं तें जाने॥

---

(२६) १. कहावत कासों सं। कहत कासो हौ सा। २. कै द। ३. तें एकै रा। ते यै सा। ४. जुगनि सं। ५. सिद्ध रा। ६. सुधि अ। ७. जब पैहँहि सा। जब पैहै द,। जो पै है रा। ८. षात द। खाउ अ, रा। ९. कहइ दिखावत अ,। कह दिखरायो रा। १०. हम तौ सं। हम तुम्ह-रा। ११. भये अ। १२. वै सं।

: २७ :

राग केदार*

मधुप जू, कहियो यतनी[१] जाइ।
अपनो निजु परिमान सावरे[२], सुनहु इहाँ[३] किन आइ॥
नेति नेति जाके गुन नामहिं, कहत निगम हैं[४] गाइ।
इहै[५] सोंचु आवै उर अंतर[६], सो एहि भांति भुलाइ॥
निर्मल मति जो होत बड़ेन की, बड़ी सगती[७] पाइ।
मानहुं मधुप मलान संग ते, रही स्यामता[८] छाइ॥
उतही हम जाती उपदेसन[९], परबस कहा बसाइ।
"प्रागनि" प्रभु सो सकुचि न, रहियो, करिहै कहा रिसाइ॥

---

(२७) १. यतनी कहियो द। कहियो इतनी स। २. साँवरो सं। ३. इहाँ सुनै सं। ४. कहत है निर्गुन रा। ५. यहै ब, अ। एहै रा। ६. भितर रा। ७. बड़े संग को सं। बड़ी संगतिहि रा। बड़े संगतें सा। बड़े संग ही द। ८. कालिमा अ, रा। कालामा सा। ९. हमहि जाति उपदेसनि सा। १०. रहिहौं सं। रहिहौ सा। रहै मनि द। रहो मति रा।
*राग धनाश्री द।

: २८ :

राग सारंग

मधुकर, कहां[१] ग्यान उपदेसौ।
प्रगट रूप[२] धरि आपु बंधायो, सदा भक्ति[३] बस केसौ॥
नंदकुमार हमारो[४] स्वामी जन्म जन्म हम दासी।
बृजबासी[५] बदित[६] जग जानत[७] बंसी धरहिं[८] उपासी॥
जो है मोच्छ ग्यान ते उधौ, सो हम चाहत[९] नाहिं[१०]।
प्रेम लच्छना[११] भक्ति सिखावै, ताके हाथ बिकाहिं[१२]॥
जहं[१३] बरु कीच मीन[१४] सचु पावै, सुधासिधु का[१५] कीजै।
"प्रागनि" प्रेम वियोगहुं[१६] ऊपर, निरगुन वारन दीजै॥

---

(२८) १. कही रा। २. देह सं। ३. भक्त सं। ४. हमारे सं। ५. वृजवासिन द। बृवासिनि रा। ६. बंदति अ। बीदिति रा। विंदित सा। ७. जानहुँ सा। जाने रा। ८. बंसी धरन सा, द, रा। ९. जानत द, रा। १०. नाही सा, द, रा। ११. सुलक्षन द। लक्षणा अ। १२. बिकाही द, रा। १३. तहाँ रा। १४. वा मीन कीच द। वर मीन कीच रा। १५. कह द, रा। १६. वियोगनि सा।

: २९ :

राग सारंग*

• रस के तुम रसिक मधुप, कहत[१] निरस नीती[२]।
रावरे विचित्र चित्र[३], लिखिए[४] बिनु भीती ।।●
स्वांस साधि पवन बांधि,[५] इंद्री[६] मन जीती।*
ता पीछे ध्यान करौ,[७] निरगुन भजन रीती।।
अबला अरु अजित[८] दसा, करी[९] काम प्रीती[१०]।
निर्गुन की कहां रही, सर्गुन आतीती[११]।।
चातुरी न[१२] पछपातु[१३], मानबी[१४] यह हीती।
"प्रागनि" प्रभु बूझि[१५] कहौ, हिये[१६] सुपथ नीती।।[१७]

---

(२९) १. करतरा। २. निरत नीती व। अनरस रीति द। ३. चित्त स व। ४. सिषिये रा। ५. आसन जीति स्वास संग सा। आसन जीति स्वासन संग रा। ६. इंद्रिय रा। ७. कहो रा। ८. अजीति रा। ९. करि रा। १०. काम लौ प्रीति द। काम की प्रीति रा। ११. सर्गुनौ अतीति द। १२. नाहि रा। १३. पछपाल व, सा, अ १४. मान विमल हीति द। मानवी यह रीति अ। मानिवो एह रीति रा। १५. समुझि सं। १६. इहै सं। १७. सुफल कै अनीति द। सुपथ कै अनीति रा।

●ये दो पंक्तियाँ द प्रति में नहीं हैं।

*कल्याण व, अ।

: ३० :

राग गौरी

कहिए कहा[१] जो जोग[२] कहन की, यह तौ[३] कथा अपार।
जो प्रभु सुनौ[४] बिस्व को[५] व्यापक, तिन[६] मिलि कियो बिहार[७]।।
जो तौ[८] सिंधु समाइ कूप में, तौ बृज लायक केसौ।
हम याको पछिताति बावरीं[९], निर्गुन केहि[१०] उपदेसौ।।
तिन सों करी काम लौं परिचै[११], चारि[१२] मुक्ति[१३] के दाता।
यह[१४] अविहित संजोग कहत हौं[१५], कैसे सहै[१६] विधाता।।
कहँ हम जाति हीन तापर तिय[१७], कहाँ[१८] रमा के नाँह।
"प्रागनि" कहाँ[१९] समाइ कुँमरो,[२०] छेरी के मुख मांह[२१]।।

---

(३०) १. कहिये कहौ द। कहियो कहा सा। मधुकर कहै रा। २. होइ सं। ३. ऐतो रा। ४. जे प्रभु सुने रा। ५. के द, रा। ६. तिन्ह सा। ७. बिचार रा। ८. जे तो रा। जो पै द। ९. बावरे रा। १०. कह सा, द। को रा। ११. चरचित रा। परचित सा। परचै द। १२. चारु रा। १३. मुकुति द, रा। १४. एहु रा। १५. धौं सं। धौ रा। १६. सहत सं। १७. त्रिय सा। १८. कहँ रा। १९. कहां सं। २०. कुह्मडो रा। कुह्मेडो द। कुह्मेंडा सा। २१. जो छेरी मुष माँह सा।

: ३१ :

राग बिहाग*

हमकौं सपनेहुं[१] मिलन बिसारो।
बिनु[२] अपराध तजी हम[३] दासी, कहा हमारो चारो॥
मारग जात[४] बिना स्रम सेवा, कियो कुटिल को गारो।
अब ऊधो मधुबन[५] कुबजा सों[६], स्याम अपनपौ हारो॥
बासव[७] बिरचि करी बरखा रितु, तब काहे गिरि धारो।
तब राषी दावानल सों अब बिरहानल बृज[८] जारो॥
जो पै हुती यहै कीवे प्रभु[९], तबही क्यों न विचारो।
"प्रागनि" प्रभु सों कहियो ऊधौ, यहै[१०] संदेस हमारो॥

---

(३१) १. सपने द, अ। २. बिन द, अ। ३. दिन रा। ४. जाति रा। ५. माधौ द। ६. संग द। ७. सुरपति द। ८. दव व। ९. करिवे को द। कीवेवधु अ। १०. इहै सा।
*सारंग सा, द।

: ३२ :

राग गौरी

लालची नैंन हमारे[१] लोल।
निरखत बदन बिकाने[२] सखि री, स्याम हाथ बिनु मोल।।
तब हों[३] इन अंखियन[४] के लीने[५], सबकी भई कनौड़ी।
अजस मयो हरि गयो हाथ सों[६], सो सुख लूटत लौंड़ी।।
लोक बेद मरजाद छांड़ि कै, जौ कौनो ब्रत[७] कीजै।
स्वारथ परमारथ दोऊ हत, सो हमहीं[८] सों छीजै।।
अब सुनि सुनि सुहाग कुबिजा को[९], होत रात दिन मांखी।
"प्रागनि" गाइ गई महरि की[१०], ढूंढ़त[११] फूटी आंखी।।

---

(३२) १. मेरो सा। मेरे अ। २. बिकान्यौ सा। ३. हो इन्ह अ। हो इन रा। तौये द। ४. आंषिन्ह सा। ५. के कारन द। के लीन्हे सा। की लोनी रा। ६ ते रा। ७. कृत व, सा। ८. हमसी द। ९. के सा। १०. महरे सं। महरे द। महे र अ। ११. टुटुत रा।

गोपी के बचन

दोहा

: ३३ :

तब लीन्हों चित करषि कै, निरखि[1] नैन की सैन।
पाले[2] पोषि पियूख सो, अब लागे दुख[3] दैन॥

: ३४ :

कहो, हमारो वस[1] कहा, कासों कहौ[2] पुकार।
जौ पै तुम ऐसी डटी[3], नागर नंद कुमार॥

: ३५ :

मधुकर, नंदकुमार सों, कहियो औसरु पाइ[1]।
सलिल[2], अनल सम होइ जो[3], मीन कहां[4] को जाइ?

: ३६ :

मधुकर निगुन सकेलिए, नंदकुमारहिं आँनि।
चारि मुक्ति[1] कीजै[2] कहा, जहां[3] चारु मुसुकाँनि[4]॥

दो० (३३) १. चितै सं०। २. प्यारो द। प्यारे रा। ३. विष सं।
दो० (३४) १. बसु रा। २. करो व। ३. हारी रा। ठटी व, सा, अ।
दो० (३५) १. कहियो यतनी जाइ सं। २. सलिलु रा। ३. तो रा। ४. कहो मीन रा।
दो० (३६) १. मुकुति रा। २. करिये द। ३. कहा रा। ४. मुसुकान द। मुसुक्यानि रा।

: ३७ :

ऊधो अनषन मरतु है कह लगि रहिए मौन।
राधारवन[२] कहाइ कै भये कूबरी रौन॥

: ३८ :

खायौ खेल्यौ एक संग, आवत यहै[१] अंदेस।
अपना[२] संजोगी[३] भये, हमकौ जोग संदेस॥

: ३९ :

यक[१] दासी अरु कुविज तन[२], कियौ[३] प्रीति की जोर[४]।
उधौ आयो उधरिके[५] जानपनी को छोर॥

: ४० :

मधुप, बिहारी विरह पर, जोगहिं जारि बहाउ।
रास रसिक नंदलाल को, नूतन कथा सुनाउ॥[१]

दो० (३७) १. ऊधो अनसन मरियतु रा। अनषन ही मरियो भयो अ।
अनषन ही मरियत है ऊधो व। २. राधारवन द। राधे रसिक व।
दो० (३८) १. इहै सं। एही रा। २. आपुन सं। ३. संयोगी रा।
(दो० ३९) १. एक अ रा। २. कूबरी द। कुबिजा रा। ३. किए सं।
४. को जोरु द। ५. आये उघरिकै अ। ६. ग्यान-पनी सं।
७. छोरु रा, द।
(दो० ४०) १. सरसिज चष नंदलाल के तिनकी कथा सुनाउ द।

: ४१ :

सोरठा

कहबी[1] कछू[2] न राखि, राखि लगावै[3] राधिका।
मधुप स्याम सों भाखि,[4] बिहित होइ सो कीजिये।।

: ४२ :

दोहा

मधुप मनहिं अनखै मिटै दुख सुख[1] होइ समान।
नंदलाल कुबजा तजी कब सुनबी[2] यह कान।।

: ४३ :

मधुप[1] खिझत[2] खिस्याइ[3] कै नहिं काहू कौ लागि।
रोवै रूप कहूं परौ भोगहिं भोगवै भागि।।

: ४४ :

वादि वकत हौ बावरी[1] हिए विवेक विसारि।[2]
जा पर पिउ दाया[3] करै सोइ सोहागिल[4] नारि।।

(दो० ४१) १. कहियो रा। कहिबी द। कहबे ऊ। २. कहुव द। ३. लगावत रा। ४. की साषि द। की सब रा।

(दोहा ४२) १. दुषतौ द। २. सुनबो द

(दोहा ४३) १. मधुकर सा, रा। २. खीझ सं। ३. खिसियाइ सं। षिझाइ सा।

(४४) १. बल्लमी व, अ, सं। २. विचारि द। ३. जापै कंत कृपा करै-अ-जाको कंत कृपा करै सं। ४. सोगिनि व। सुहागिन सा। सोगिल रा।

: ४५ :

गोपी बचन*

देषि दसा व्रज तियन की रस पोत मति जोइ।
मधुकर ताहि सिखाइए जोग जोग जो होइ॥*

: ४६ :

मधुप[1] जहां[2] तुम से चतुर तहाँ वावरी कौन।
प्रेम पियासी त्रियनि[3] कौ मोट वधावत पौन॥

: ४७ :

जहाँ निरन्तर नेह[1] है तहां न छल ठहराइ।
प्रागनि पूरन कुंभ में फिरि जल कहां समाइ॥

: ४८ :

रसिक रास सो रमि रही हुतो हमारो भाग।
मधुकर सोंचत रात दिन समुझत कछु नहिं[1] लाग॥

---

(४६) १. मधुकर सं०। २. जहँ सं०। जह द। ३. तियन सं। त्रियन द।

(४७) १. नेम ब, अ।

(४८) १. कछुउन सं। कछुब न द।

*विशेष यह दोहा केवल रा प्रति में प्राप्त है।

: ४९ :

ऊधौबचन

कहत उपनिषद जानबी[1] व्यापक सूछम वेष[2]।
गोपि सखा चंद्रावली[3] निरगुन सगुन विसेष[4]॥

: ५० :

गोपी-बचन

सगुन निगुन[1] जसुदा सुवन[2] व्यापक सबहिं समान।
कहत दूसरो ब्रह्म है ना[3] कछु मेरिय[4] जान॥

: ५१ : *

प्रीति निरन्तर कहत है दुहुँ दिसि एक समान।
ए हो समुझि देषी मधुप झूठ हमारो जान॥*

: ५२ :

ऊधौ के बचन

गोपी पूरन ब्रह्म तें,[1] अंस[2] औतर्‌यौ[3] आंनि[4]।
"प्रागनि" पापी जननि[5] को, भार[6] भूमि पर जांनि[7]॥

---

(४९) १. जानिवो सा। जानिवी द। २. सुक्ष सुवेसु द। ३. चंद्रावती द चंद्रावत रा। ४. लेष रा।

(५०) १. सर्गुन निर्गुन अ, रा। २. सुअन सं। ३. सो द। ४. मेरे सं।

(५२) १. है द। ते, अ. रा। २. यहाँ अ। असु रा। ३. अवतरे सा। ४. आन रा। ५. जन्म द रा। ६. मोर रा। ७. मान रा।
*यह दोहा केवल रा प्रति में है।

गोपी बचन

: ५३ :

पूरवता को गुन सुनौ, कहत निगम[1] हूँ गाइ[2]।
जो सब ठौर समान है, जामे सबै समाइ॥

: ५४ :

लोक चौदहो मातु को, दिखरायो[1] मुख बाइ।
एक समै बृज के बसे[2], मोहन माँटी खाइ॥

: ५५ :

मधुकर या अनुमान तें, व्यापक एइ बिसेखि[1]।
"प्रागनि" सठ हठ[2] छांड़िकै, हिय की[3] आंखिन देखि॥

ऊधौ बचन

: ५६ :

हौं[1] कछु औरै[2] कहत हौं, तुम[3] समुझत कछु आन।
इत हौं[4] सुनी पुरान में, कही[5] जो करौ प्रमान॥

: ५७ :

गए छीरनिधि कौन पै, जो पै पूरन एइ।
पारथ प्रन हित बिप्र के, "प्रागनि"[1] बालक लेइ॥

---

(५३) १. मघुप कहो द। २. समुझाइ द, अ,
(५४) १. देखरायो सा, द। दिषराइ रा। २. बृजवास में अ
(५५) १. बिसेष द,। विसेषु रा। २. सवहु रा। ३. हिय के सा। हिये किद। हियू कि रा।
(५६) १. हम अ। हौ द। २. और अ। ३. तुम्ह रा। ४. हमहू द। ए है रा। ५. कहो रा।
(५७) १. गये जो व।

गोपी के बचन

: ५८ :

मधुप, सुनी तुम कहत हौ, हम देखी[1] भरि नैंन।
संकर सक्र[2] बिरंचि के, एइ सांवरे[3] अंन।।

: ५९ :

गोबरधन में अंस कै, आपु समानें आइ[1]।
आपुन ही पूजा करी, "प्रागनि" लोक देखाइ।।

: ६० :

तैसी मधुकर यौं भई[1], करी[2] छीर निधि गौन।
गर्ब सखा के हरन[3] को, और दूसरो कौन।।

ऊधौ के बचन

: ६१ :

गोपी, पारथ कृस्न की, सुनी सो अब[1] कहि जाति।
सेत[2] कृस्न द्वै लोंम तें, है इनकी[3] उतपाति।।

---

(५८) १. देखे द। २. संकर संकर रा। ३. सांवरो सा। साँवले अ। सांवल रा।

(५९) १. गोवरधन में जाइ कै अपनै रहे समाइ द।

(६०) १. होइकै स। यहौ है द, अ। रोम तें सा। हौ है रा। २. कियो द। करौ रा। ३. हतन रा।

(६१) १. सोई द रा। २. स्वेत रा। ३ एन्हकी सा। तिनकों रा।

गोपी के बचन

: ६२ :

मधुकर, उतपति कहन कौं, निगमौ नहिं समरत्थ।
मूढ़ रहत किन मौंन करि,[1] कहि[2] को बकै अकत्थ[3]॥

: ६३ :

सुनी अहै इतिहास मों,[1] पूरनता परमान।[2]
पच्छपालना[3] छांड़ि कै, बात हिये मों आन॥

: ६४ :

तातें कहत न संभवै, अंसकला नन्दलाल।
पांडुपुत्र के जग्य में, हैं साद्दी सिसुपाल।

---

(६२) १. ह्वै द, रा। २. कत द। ३. अनर्थ रा। अकथ्य सा, ब,
(६३) १. हमहू सुनी पुरान में द। २. परिमान रा। ३. पच्छपात नहि द।
(६४) १. साखी सा, द। २. सिसिपालु रा।

ऊधौ के बचन

: ६५ :

राग मट*

करि गुरु गोपी ऊधौ जान।
गहे पायं[१] दीन्ही[२] परिकर्मा, पूजी[३] स्याम समान।।
पायो एक अनन्य महाव्रत, जामे प्रेम प्रधान।
त्रिपित[४] मये मनसान रही कछु, पियत सुधा रस[५] पान।।
बीज[६] मंत्र श्री नंद लाड़िले[७], अघतम[८] मनसा[९] मान।
आनंद मगन फिरत कुंजन में, करत मधुर सुर[१०] गान।।
इच्छत गुल्मलता[११] होवै कहं, निर्मल ग्यान भुलान।[१२]
"प्रागनि" सखा प्रेम[१३] के पलटे, बिनु हीं मोल बिकान।।●

---

(६५) १. पाइ द। २. दीनी रा। ३. मानी द, रा। ४. तृपित द। त्रपिति व। ५. के द। ६. पीय रा। ७. लाडिलौ द, रा। लाडिलै अ। ८. आतम द। ९. मानस रा। १०. बिमल गुनगान सं। निर्मल ज्ञान मुलान सा। ११. गुलाब लता व। गुल्व लता सा। ११. भूलो निर्मल ज्ञान द। १२. प्रेम सखा द।
●यह पंक्ति सा तथा यह पंक्ति रा प्रति में नही है।
*राग गौरी रा

: ६६ :

राग केदार*

तिहारी प्रीति जाइ[१] नहिं बरनी।
चातक, मोर[२], चकोर, मृगन[३] सब[४], सिखी तिहारी धरनी ।।
इक[५] रसना होइ कौन[६] बापुरो, सकै न सेस[७] बखानी।
नंदनंदन जो[८] कही सुनी सोऊ न आपनी मानी ।।[९]
जौ कहिहौं हौं कोटि जन्म लौं, ऊधौ जीवन पाई।
गोपिन के गुन ग्यान को पलटो,[१०] मो पै दियो न जाई ।।
यहै निरंतर कहि करि[११] मोहन, कछु[१२] करुना सी कीन्हीं।
"प्रागनि" प्रभु बृज के चलिबे कों,[१३] मोकों अग्यां दीन्हीं ।।

---

(६६) १. जात द। जाय व, रा। २. मीन रा। ३. मधुप सं। मृगन द। ४. मिली रा। ५. एक अ, रा। ६. होइ कवन सं। ७. वेद सं। ८. जे द, अ। ९. कही सुनी ते ऊनि आपनी मानि द। कहो सुनहु सोइ आपनी मानि रा। कही सुनी सोऊ न आपनी मानी सा। १०. के पलटे द। ११. कहि कहि सं। १२. कछु मोहन सा। १३. जो कह अ

*आसावरी द

: ६७ :

राग गौरी

सबै[१] मिलि इहै[२] आसिष देहु।
जासों[३] मोसों[४] नंदनंदन सों बाढ़ै अधिक[५] सनेहु॥
पावौ बास ब्रिच्छ ह्वै बन मे मांगौं यह फल एक।
नित[६] प्रति होइ[७] सीस पर मेरे, पदरज को अभिषेक॥
मृग मयूर मर्कट जीवादिक, देह धरें[८] इत जौन।
कालिन्दी बृन्दाबन वासिन, करी तपस्या कौन॥
जलचारिन[९] देखी जल लीला,[१०] वन चारिन[११] बन केलि।
"प्रागनि" जन्म धरे[१२] बड़भागिन, मुक्ति[१३] पाय सों ठेलि॥[१४]

(६७) १. सब सं। सम व। २. यहै व, अ। ग्है रा। ३. जाने रा। ४. मेरो रा। ५. अकथ अ। ६. दिन सं। ७. होहु द। ८. धरौ वेष सा। ९. जल बासिन सं जल धारिन रा। १०. क्रीड़ा सा। ११. बनवासिन सं। १२. जीव धरो रा। १३. मुकुति रा। १४. हेलि रा।

: ६८ :

राग सोरठ*

अब मोहिं देहु आयसु देवि।
हौं तिहारो दास निसि दिन[१] सर्बदा पद सेवि॥
चित्त तें न बिसारवी मोहिं[२] परम दीन दयाल।
मनहुं में मोहि आनबी[३] जन जानि जूठन पाल॥
जौं कछू[४] हौं करि ढिठाई,[५] कृस्न[६] आयसु मानि॥
छमापन[७] सों[८] सबै कीवो,[९] आपनो करि[१०] जानि॥
कहा "प्रागनि" करै बिनती,[११] विमल बुद्धि न आहि।
भयो बंदी नंदनंदन, बेद बंदत जाहि॥

---

(६८) १. सबु दिन द। निसुदिन अ। दिन प्रति रा। २. बिसारियो तुम द। ३. जानबी द। तिय आनिवी रा। ४. जौन मैं कछु द। ५. हो करी ढीठो सं। ६. सुम रा। ७. छमापुनि रा। ८. ते द। ९. करिबी सं, सा। कीबी रा। कीजै द। कीयो अ। १० जन सं। ११. कहा बिनती करी प्रागन द।
*राग गौड़ रा

: ६९ :

राग गौरी *

ऊधौ, अन्त न होंहि अहीरी।
कहां हमारी विष सी बतिया,[१] कहां तिहारी[२] सीरी।।
ग्रंथहु में बरनों बहु[३] अंतर, बासु नगरु खेरे को।
कहौ समान होइ धौं कैसे,[४] सील स्वामि[५] चेरे को।।
छोटे बड़े भये दुइ यातें, जातें[६] बुद्धि बिसेषि।
जौं भृगुलात हन्यौ हरि हिय मैं, तदपि न मान्यौ तेषि।।[७]
अपने जरी हुती जो कहियो, ऊधौ उनपै जान।[८]
ते तुमही सौं कही जानिकै, "प्रागनि" प्रभु अनुमान।।

---

(६९) १. विषवत वातै अ। २. रावरी द, रा। ३. बरनहुँ अति सा।
४. कैसो रा। ५. स्याम सा। स्यामि रा। ६. ताते रा। ७.
धरीनाम कहुनेष सा। ८. उनको मानि सं।
*राग मारू अ

: ७० :

कहौ हम कौन बड़ाई जोग।
जे हम करी स्याम संगति मिलि,[१] तिनकी[२] निंदा मानत लोग।।
पति छांड़े, पितु, मातु, भ्रातु, सुत, तन न बिसारे[३] चीर।
बेद उलंघ करी हम जैसी, तैसी भुगतत[४] बीर।।
आपुन आइ सुनायो सिवधनु, हमसौं[५] तरन[६] उपाउ।
केतिक कटुक कही हम तुमसौं, तजी न आपु सुभाउ।।[७]
अंत बड़े तुम दुहूं भांति के, नवहु[८] सो अचरज कौन।
अब हौं कहौं[९] कवन विधि, "प्राणनि", तुम्हैं[१०] करन कौं गौन।।

---

(७०) १. कान्ह संग ढीढै द। कान्ह संग रा। २. जिनकी रा। तिनको द। ३. बिचारी सा। ४. भुगुतत ६। ५. हम कहैं सा। ६. तौन द। ७. केतिक बात कही तुम ही सौं आपुन तजी सुभाउ सं। केतो कछुक कहो तुम ही सो तजो न आपु सुभाउ द। ८. नवौ सा, द। ९. मुष सो कहौ द। मुष ते कहो रा। १०. तुमहि सा।

: ७१ :

राग आसावरी

ऊधौ, भागन तैं इत[१] आए।
दीन्ही दरस कृपा करि हमकौ,[२] लोचन जरत जुडाए।।
सुनत रहत हीं सदा समीपी, काहू पुन्यन पाए।[३]
परम विचित्र मित्र मोहन के धन्य जननि जिन जाए।
सिव को ध्यान ग्यान सिद्धन को, कर्मुक[४] वचन सुनाए।।
एकै पै गति भई मनहुँ जौ,[५] ब्रिज की तियनि सताए।।
कमल नयन की कृपा चाहिए, दूरि निकट भल भाए।
"प्रागनि" प्रभु चिरजीव[७] वीर दोउ, रहै[८] मधुपुरी छाए।।

(७१) १. हीते द। २. हमें करि किरिया द। ३. धन्य जननि जिन जाए सं। ४. श्री मुष द। ५. मधुप मधुपजी द। भानु हति रा। ६. का सं। ७. चिरजीवी सं। धीर जीअहु रा। ८. रहहिं अ। रहौ रा।

: ७२ :

राग नट *

सोच भयौ ऊधौ को पोच निपट[१] कीन्हीं।
चलत तीनि दिन की मोंहि अग्यां[२] प्रभु दीन्हीं।।
ताके षट मास बीते बूझे[४] का कहि हौ।
कहिहैं केहि हेतु रहे,[५] सीस नाइ रहि हौं।।
हंसि कै तब जान राइ, निकट बोलि लै हैं।
मिलिहैं मोंहि अंकम भरि, सीस पानि दैहैं।।
गहिहौं मैं चारु चरन,[६] तीनि ताप हारी।
कहिहौं तब "प्रागनि" बृज चरिचां सुखकारी।।[७]

---

(७२) १. निपट पोच सं। २. आग्यां मोंहि सं। ३. भयो सं। ४. पूछत द। ५. लोभ रहे द, रा। ६. चरन चारु सं। ७. अधिकारी द।

*बिलावल रा। आसावरी द। मलार अ। मलार दरबारी ब

: ७३ :

राग मारू

साजे[१] रथ, सुफलक सुत, गौन चित्त[२] राखौ।
गदगद ह्वै गोपिन सों,[३] दीन वचन[४] भाखौ।।
जैसे हौ उनको जन, तैसोई तिहारो।
भक्ति प्रेमलच्छना सिखाइ, सठहि[५] तारो।।
उनहँ कृपानिधान,[६] बहुत कृपा कीन्ही।[७]
जोग के सिखावन मिसु, अग्यौं मोहिं दीन्ही।।
आयो सुभ सगुन साधि, सम्यक सुधि[८] पाई।
"प्रागनि" प्रभु प्रगट छांड़ि, झांकत हौ झाई।।

---

७३) १. साज्यो सं। साजो द रा। २. मन रा। ३. सुर गोपिन के द। सुर गोपिन ते रा। ४. वचन दीन द। ५. सठनि सा। ६. करुना निधान ग। ७. बहुत कृपा मोहिं कीन्ही व। ८. सिधि सं।

: ७४ :

राग धनाश्री

हांको रथ कै[1] प्रनाम ऊधौ पथ लागे।
रोम रोम भेदों[2] रंग, परम प्रेम पागे।।
गोपिन[3] के बिरह घाव, सेरुह फेरि[4] फूटे।
देह दसा रहित भईं, प्रान चहत छूटे।।
तब तौ कछु औधि हुती,[5] आवन की फिरि कै।
अब निरास मगन भई, प्रेमसिंधु[6] तरि कै।।[7]
गोपी के उर कठोर, समुझावत[8] सबहीं।
ऊधौ के वचन सुनत,[9] द्रवहिं[10] स्यांम[11] कबहीं।।
तातें तुम[12] धीरधरौ विकलता निवारौ।
जो पै अब आइ[13] बनी, विधि सों का चारो।।[14]
हृदय समुझि चेत भयो, सीख मानि लीन्ही।
"प्रागनि" फेरि प्राननि को, अवधि आस[15] दीन्हीं।।

---

(७४) १. रघु करि रा। २. बेधो रगु रा। ३. गोपिन्ह सा। ४. सेरुहे फिरि रा। ५. हती रा। ६. विरह सिंघु द, रा। ७. मरि के अ। ८. समुझावै द। ९. सुने सा। १०. द्रवै द। ११. प्रभु रा। १२. मन द। १३. आनि सं। १४. कह चारो रा। १५. तियनि सं। त्रियनि द, सा।

७५ :

राग सारंग*

साझ समै पुर पैठे[१] जाइ।
ऊधौ गये प्रथम अपने गृह[२] सभा[३] दाहिने लाइ॥
ताही समय दड द्वै बीते, आयो धावन धाइ[४]।
चलिए राय[५] बुलाये जदुपति, उठे रजायसु[६] पाइ॥
स्याम[७] सभा ते सदन सिधाए, जन[८] दूसरो पठाइ[९]।
बीच मिलो[१०] सेवक आवत[११] ही, लैगो[१२] तिर्ताहि लेवाइ।
द्वार जनाइ गयो अत पुर,[१३] कियौ प्रनाम सिरनाइ।
"प्रागनि" प्रभु उही[१४] अक पसारो, लियौ सखा उर लाइ॥

---

(७५) १. पहुँचे सा। २. घर अपने सा। गृह अपने द। अपने घर रा। ३. सषा रा। ४. धावन धायो स। ५. राज सा, द, रा। ६. राजा आयसु अ, व। ७. स्वामि द। ८. जनु रा। ९. पाई सा। १०. मिले सा। ११. आवत ही सेवक द। १२. लैगँ सा। १३. अन्तरपुर सा। १४. प्रभु उठि सं।
*राग नट रा। राग गौरी द।

: ७६ :

राग नट

ऊधौ, कुसल छेम तें आए?
समाचार क्रम ही तें कहिये, दिन तौ[१] बहुत लगाए॥
बाबा नंद, जसोदा मैया, मो बिनु कहा करत हैं।
हौं कठोर पाहन ते ऊधौ, वै तौ दिननि मरतु हैं॥
कहा दसा गोपिन की कहिए,[२] जिन्ह मोहिं सर्बसु[३] दीन्हों।
लोक वेद तजि भई[४] निरंतर, मैं निरवाह न कीन्हों॥
मो पै कछु न भई येकौ विधि कहं लगि गुनन[५] गनौंगो।
बृज वासिन्ह कहं जन्म कनौडो,[६] "प्रागनि" रिनी रहौंगो॥

---

(७६) १. तो व, अ। २. देषी गोपिन्ह की सा। देषी गोपिन की सं। ३. सर्बस सं। ४. मिलीं सं। मिलि रा। ५. गुननि सा, रा। ६. करोडो अ।

: ७७ :

राग केदार

तुम बिनु जानि सिरोमनि माधौ अैसी ऊन और को मानै।
दूजो दीनदयाल और[१] को, अंतरगति की जानै॥
समाचार क्रम हीं ते[२] बूझे[३], ते सुनिए दै[४] कांन।
वा दिन को हौं चल्यो इहां ते, गयो जु अथवत भान॥
देखी जाइ जसोदा मैया, बाबा नंद तिहारे[६]।
लोचनहीन दीन दोऊ जन, नहिं जीवत नहिं मारे॥
चरन पकरि[७] विनती मैं कीन्ही,[८] तन अंसुवन[९] जल भीनें।
यतनी कही जसोदा मैया, नयन हमारे छीने॥
और कहैं अब भये[१०] सयाने, मिलत न सोभा पावै।
ऊधौ हैं हम परम[११] अभागी,[१२] स्याम इहां कित आवैं॥
एक दिना मैं दांवरि बांधी, तनक दही के काज।
अब कौ[१४] देखि प्रताप बच्छ को, होत होइगी[१५] लाज॥
पुत्र[१६] आस कै पालि[१७] तनक तें, जो मैं सर्बस साजो।
दै मुख में रज मधुस्वादिक[१८] ज्यौं, लै सुफलक सुत भाजो[१९]॥
तापर सुनत देवकीनंदन, मेरो कान्ह कहावै।
"प्रागनि" सुनि सुनि महासूल सो,[२०] मोहि सी[२१] पापिनि पावै॥

---

(७७) १. आहि रा। २. बूझौ सं। पूछे द। ३. सो सं। पकरि द, रा। ५. हियां व, अ। ६. तुम्हारे द। ७. लागी द। ८. कीनी रा। ९. बसन आसु द। १०. भये अब भये सं। ११. हम हैं सं। १२. अभागिनि सा। १३. दिवस सं, द। १४. तौ सं। १५. वत्स सपूत रा। १६. सुष रा। १७. पोषि रा। १८. जसोदा सुत को व, अ। १९. सुत लै भाजो द। २०. सोच है अ। २१. मोसी अ।
*राग गौरी सा।

: ७८ :

राग केदार

प्रभु जू[१], कठिन बीती राति।
जाम चारौं मोहि लागे[२], चारि जुग सों[३] जाति।।
प्रात होतहिं मातु बोली, भानुपुर लौं जाहु।
देहु मति तुम जो विहित है, चलो नयन प्रवाहु[४]।।
सीख सुनि हौं चल्यौ पग द्वै[५], मिली बीचहि आनि[६]।
कहा देखौ नखसिखा लगि[७], प्रेम रस की खानि।।
गात मेरे पीत पट हैं, रही नैन निहारि।
निरखि कै दंडवत कीन्ही, चलो नैंनन वारि।।
नाम बूझो, मैं कहीं, लै गई पुरहिं[८] लेवाइ।
धाम तजि तजि बाम[९] सुनि सुनि सबै आई धाइ।।
उदक[१०] आसन असन बहु विधि, कियो[११] अति सनमान।
सकल बिधि कै कुसल बूझी[१२], पूजि तुमहिं समान।।
निगम चारौं ब्रह्म बकता, कहैं जो समुझाइ।
अचल मति नहिं चलन की पुनि[१३], मेरु किन चलि जाइ।।
कौन हौं मोहि बुद्धि कितनी,[१४] तुम लियो जिन[१५] जीति।
तहां छल न बसाइ[१६] "प्रागनि", जहा सांची प्रीति।।

---

७८) १. प्रभु जी द, रा। २. बीते द,। वितो अ। ३. सम अ। से रा। ४. होहु तुम सिच्छावती इत उतहि विरहा राहु द। होइ मति तौ सिंधु सुराहतु है उतही विरह राहु रा। ५. द्वै पग स। ६. बीच ही मिलि आन सं। ७. लौ द। ८. ताहि सा। ९. नाम द। १०. दै कै सा। ११. दियो रा। १२. पूछी द, रा। १३. चली उनकी द। चलन की किन अ। १४. कतिक मति है द, रा। १५. जाउ रा। १६. तहाँ न छल ठहराय सं। तहं न छल ठहराइ द।

: ७९ :

राग सोरठ

प्रभु जी, उपजै कौन कै ऐसी।
चरन कमल[१] की प्रीति अखंडित[२], ब्रज जुवतिन[३] कै जैसी ।।
केवल तन मैं भई तिहारी[४], प्रेम कहां[५] सों कहिये।
सुधा समान वचनिका उनकी, सदा सुनत ही रहिये ।।
भजी निरंतर भाव भामिनी, मेटि भरम की टाटी।
मोपर कहत सिखावन सीखौ, कछुक प्रेम की पाटी[७] ।।
तातु, मातु, गुरु, बंधु, जातिजन, ना उनके कछु भाये।
"प्रागनि" प्रभु पल कल न परत है, बिना केलि गुन[८] गाये ।।

---

७९) १. कवल रा। २. अखंडित द, सं। ३. देविन की रा। ४. निरंतर सं। ५. अपथु कहा रा। ६. बचन उनके ते रा। ७. परिपाटी सं। ८. परति बिन्‍ रस केलि रा।

: ८० :

राग केदार

राधा नाथ देखी जाइ।
भयो[१] कछु अनचेत वाके[२], मेरियो सुधि पाइ॥
निकट वाके ह्वौ गयौ[३], तब कही[४] सखिन्ह बुझाइ[५]।
गुज माला गरे मोरे[६], रही नयनन लाइ॥
कहै कछु ना, होत[७] धुनि सी, कहै रसना गाइ[८]।
स्याम स्याम हिये जपै छिन[९], और कछु न सुहाइ॥
हंसि कहै कछु गाइये, फिर उठै आपुहिं गाइ।
विदित, घर के दुषित पीडित, हिये उपजी बाइ[१०]॥
कबहुं चेतत चतुर सुंदरि, तब रहौ सिर नाइ।
बकत[११] गुरजन बसन वोढ़त, कछुक रहत[१२] लजाइ॥
कान्ह याको करि गये कछु, कहत कीरति गाइ[१३]।
प्रानदानहिं देहु[१४] "प्रागनि" जाहि दरस देखाइ॥

---

(८०) १. भई अ। २. याके रा। ३. ही जब गयी रा। ४. कह्यौ सा। ५. जनाइ द, रा। ६. गरे मेरे गुंज माला द। ७. अन होत अ। ८. आइ रा,। आहि अ। ९. श्रीकृष्ण जी जपियो करो दिन, सा, अ। स्यामु स्यामु ही जपै छीन रा। १०. बकत घर के देखि खीझत हिये उपजी बाइ सं। ११. जाइ रा। १२. रहै द। रहे रा। १३. कहत फिर सरमाइ सं। १४. देहिं अ। देहि रा।

८१ .

राग नट

प्रभु जू[१], प्रेमनिधि ब्रज आहि।
पैठि कै को पार पावै, बुद्धि यतनी[२] काहि।।
चढी चरन जहाज गोपी, वोई[३] जानत भेद।
सकनि सो अवगाहिबे को, कौन बपुरो[४] वेद।।
उठत जामे[५] विरह लहरी,[६] देखि मन अकुलाइ।
ब्रजतिया भले बराइ[७] जानै, और पै बहि जाइ।।
जह उठत सोक[८] समीर अति वल चलत पवन[९] दरेर।
तेहि ठौर राखत ग्यान केवट[१०], लोह लगर जेर।।
मगर ह्वै मदनादि जामे, ग्रसन को किय घात[११]।
रहत निसिदिन चेतना मे, ऐसही उपपात।।
मरजिया ह्वै नद जसुदा, रहे[१२] ता ढिग छाइ।
सुरति मुकुता रावरो की, हिए[१४] आसा लाइ।।
तेहि[१५] सिंधु को मै[१६] भयौ वायस, रह्यौ[१७] थकि षटमास।
दसहुँ दिसि[१८] की भई[१९] "प्रागनि", आजु[२०] आस निरास[२१]।।

---

(८१) १ प्रभु जी द, रा। २. ऐमी स। एननी रा। ३ तेई स। वई रा। ४ वपुरा सा, द, रा। ५ जामौ अ। ६ पैठत द। ७ बृज तियाहि बराइ स। ८ सोग अ। ९ पौन अ। १० केवल अ। ११. बात द, अ। १२ रहत सा बहे द। १३. मुकुत रा। मुकुता स। १४. रही अ। १५ ता द, रा। १६. हौं द, रा। १७. थकि रहेउ द। थकि रहो, द, रा। १८. चहुँ दिसा सा। १९. आजु रा। आज सा। २०. गई सा। २१. सुधियन पास सा। सुधियन स द।

: ८२ :

राग कल्याण*

असमैं मीत काको कौन[१] ?
वोई हैं[२] ब्रज के बसैया, वेई नंद की मौन[३]॥
टहल मिसु मृगलोचनी हंसि, महल पैठहिं धाइ।
निरखि कै बलराभ रथार्महिं[४] चलत नयन जुड़ाइ[५]॥
जेहि भौन मीतर देखिए[६] को, कौन है केहि तीर।
तेहि महल के ढिग[७] जाइकैं[८], नर नारि धरत न धीर[९]॥
जेहि महरि कै मुष[१०] देखि कै, सुरपतिहु कहत सिहाइ।
अमर पद तजि दास दासी, होंहिं नर तन पाइ[११]॥
जे नंद जसुदा नगर नायक बगर हैं, दोउ दींन।
ते दोहनी कर दुहन को, पर वालकन आधीन॥
सुखसिधु[१२] भूल्यौ प्रगट[१३] माया, इहां लौं रहि आनि।
कहै ते दुहि देत "प्रागनि" हेतु हरि कौ मांनि[१४]॥

---

८२) १. कौनु रा। २. वइ है रा, सा। ३. भौनु रा। ४. विनु रामु रा। ५. सिराइ सा। दुराइ रा। ६. देषि सकत न अ। ७. तेहि भौंन सनमुख रा। ८. देषि द। हेरि रा। ९. सकत न नारी नर धरि धीर रा। १०. सुख सं। मुषु रा। ११. जाइ व। आइ अ। १२. सुधि रा। १३. प्रवल सं। १४. जानि द।
*सारंग सा।

८३

राग नट

ऊधौ रहे कथा कहि, आयो गोपिन[१] को आवेस।
मगन भये[२] वपु गिरो धरनि पर[३], आपुहि उठे रमेस[४]॥
लयौ लगाइ सखा भरि अकहि, देखि गोपिका प्रीति[५]।
रही सो प्रग्या सब गोपिन[६] की, गई घरी द्वौ बीति॥
लोचन सजल भये हरिहू[८] के, माया मानी नाम।
आई सुरति सकल[९] गोपिन की, श्री वृंदावन धाम॥
पोछि नयन[१०] पट सखा जगायौ, स्याम रहे[११] सिर नाइ।
"प्रागनि" प्रभु को देखि प्रेम[१२] बस, ऊधौ पकरे पाँइ॥

---

(८३) १ गोपी अ। गोपिन्ह सा। २ मयो द, अ। ३ महँ सा। ४ आपु उठे रामेस अ, व। आपुन उठो रमेसु रा। ५ लयौ सषा भरि अक तुरत ही पूरण देषी प्रीति सा, द। लये सषा भरि अक तुरत साची देषि प्रीति रा। ६ सो प्रग्या स। चरचा अ। सो प्रज्ञा द। ७ अगन सं। गोपिन्ह सा। ८ प्रभु तिन्ह के सा। ९ हिए स। १० पीत अ। ११. रहे स्याम सा, द, रा। १२ परम रा।

: ८४ :

राग सारंग

कहौ[१] प्रभु, हौ तुम[२] कृपानिधान।
अंतरगति की सब जानत हौ, करि जननी मन[३] जान॥
एक बार करुनाकरि, ब्रज लौं[४], चलिए आनंदकंद।
मदा कुहू[५] व्यापत[६] है तुम बिनु, श्री वृंदावनचंद[७]॥
नयनपियूख सीचिए[८] गोपिन, फिरि आनन्द की बेलि।
तुम पूरन प्रभु कहा घटैगो,[११] बहुरि कीजिए केलि॥
कौन पुन्य तें पूत भये हरि[१२], कौन पाप तें सोग।
"प्रागनि" नंद जसोदा जू की, निंदा मानत[१३] लोग॥

---

(८४) १. कहु रा। २. तुम हौ द। ३. श्री जानत मनि जान द। ४. ब्रज लौं रा, अ। ५. कान्ह सा। कुन्ह अ। ६. बीतत रा। ७. करि अ, व। ८. सींचिकै रा। ९. गोपिन्ह सा। गोपी अ, रा। १०. फिरहिं अनंद सं। ११. घटहुगे द। १२. प्रभु रा। १३. नींदत है द। निंदित है रा।

: ८५ :

राग गूजरी

कृष्ण बचन

ऊधौ, ब्रजवासी मोंते नहिं न्यारे यह करु निजु[1] परतीति।
हौं निसिबासर तहां रहत हौ, जहां निरंतर[2] प्रीति॥
गोपी अरधंगी[3] हैं ऊधौ, कहौ कहां को भेद।
घट घट व्यापी हौं पुरुषोत्तम, स्वांस हमारी वेद॥
ताकी रिचा सकल यै गोपी[4], जैसे सिधु तरंग।
जब[5] पूरन औतार धरत हौ, तहां अवतरत[6] संग॥
तिन्ह को सोचु कहां लौं[7] कीजै[8], ऊधौ मोहिं बताइ।
"प्रागनि" जिन गोपिन[9] की कीरति, जगत[10] तरंगो गाइ॥

---

८५) १. निजु करि रा। २. है साँची द। ३. अरपी अग्नि रा। रिचा अगिनि द। अर्ध अंग सं। ४. है गोपी द, अ। गोपी हैं सा। ५. जो अ। ६. रहत मों सं। तहां हमारे सा। ७. लगि सं। है रा। ८. कीबे हैं ब, अ। करिवे रा। ९. जिन्ह गोपिन्ह की सा। गोपीन की अ। १०. लोक सं।

: ८६ :

ऊधौ, तो[१] सों कहौं, निरंतर निज भक्तन में रहत हौ[२]।
वेद अतीत[३] कोउ नहिं जानत,[४] यहै हमारौ मतु है॥
हौ निर्लेप, निरंजन,[५] निरगुन, कारन तें बपु धारौं।[६]
कर्म रहित अपनी इच्छा तें, प्रगटत हौं जुग चारौं॥
देह अदेह[७] तकौ मति कोऊ[८], ग्यान दिस्टि को कोऊ।
छांड़े देह बहुरि नहिं पै[१०] है, जन्म[११] जगत में सोऊ॥
यह मत है देवन्ह कौं[१२] दुर्लभ, मधुप[१३] हिए महं राखी।
"प्रागनि" तोसों फेरि[१४] कहौगो, देइ येकादस[१५] साखी[१६]॥

---

८६) १. तुमसे सं। २. रहतु हैं रा। रहत है अ। ३. वेदातीत द। वेद पुरान रा। ४. तकौ मति कोऊ सं। ताको सुत को अ। ५. निरंतर रा। ६. कर्म रहित अपनी इच्छा तें सं। कर्म रहित अपनी माया ते द। कर्म रहित जो आपन इक्षा सा। ७. अहेत द। ८. कहत है मेरी द। ९. जेहि होऊ सं०। कै कोउ द। १०. पै हौ सा। पावै द। ११. जनमत अ। १२. कहं सं। १३. गुप्त अ। १४. उनहु मतु है देवन को दुर्लभ गोपी ते हम राषी रा। १५. बहुरि रा। १६. इकादस सं।

सहायक-सामग्री

लेख

१. प्रागन-कवि—एक परिचय—ले० श्री जवाहरलाल चतुर्वेदी (अप्रकाशित)

२. प्रागन कवि कृत भ्रमरगीत—ले० श्री भगीरथ प्रसाद दीक्षित (प्रकाशित माधुरी, जुलाई, सन् १९२५)

ग्रंथ

१. हिन्दी-साहित्य-कोश—सं० डा० धीरेन्द्र वर्मा

२. भ्रमरगीत-सार—सं० आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

३. हिन्दी में भ्रमरगीत काव्य और उसकी परम्परा—डा० स्नेहलता श्रीवास्तव

४. उद्धव-शतक [विवेचना और व्याख्या]—ले० रा० प्रकाश दीक्षित

५. कबीर-ग्रंथावली-—सं० डा० पारसनाथ तिवारी

६. अष्ट-छाप और बल्लभ-सम्प्रदाय—भाग २—डा० दीनदयालु गुप्त

७. श्री मद्भागवत्—अनु० श्री रूपनारायण पाण्डेय

८. हिन्दी हस्तलिखित ग्रंथों का खोज-विवरण भाग ११, १२, १३ सं० डा० हीरालाल

भ्रमर-गीत-काव्य सम्बन्धी आलोचनात्मक साहित्य

१. भ्रमर गीत-सार—सं० आचार्य रामचंद्र शुक्ल
२. हिन्दी-साहित्य में भ्रमर-गीत की परंपरा—ले० सरला शुक्ल
३. कृष्ण काव्य में भ्रमरगीत—ले० डा० श्यामसुन्दरलाल दीक्षित
४. हिन्दी में भ्रमर गीत-काव्य और उसकी परम्परा—डा० स्नेहलता श्रीवारतव
५. नददास का भ्रमरगीत : विवेचन और विश्लेषण—डा० स्नेहलता श्रीवास्तव
६. भ्रमरगीत सार में काव्य, कला और दर्शन—श्री प्रेमकृष्ण अनामिल
७. भ्रमर-गीत सार-समीक्षा एवं व्याख्या—श्री पुष्पपाल सिंह
८. सूरदास और उनका भ्रमरगीत—श्री ओमप्रकाश सिंहल
९. भंवरगीत नंददास—डा० प्रेमनारायण टण्डन
१०. भँवरगीत नंददास—सं० श्री जवाहर लाल चतुर्वेदी ।